SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 12
May - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मई-2025

रु.20/-

कृष्णो रक्षतु नो जगत्त्रयगुरुः, कृष्णं नमस्या म्यहं,
कृष्णेनामरशत्रवो विनिहताः, कृष्णाय तस्मै नमः।
कृष्णादेव समुत्थितं जगदिदं, कृष्णस्य दासोऽ(अ)स्म्यहं,
कृष्ण तिष्ठति सर्व मेत दखिलं, हेकृष्ण रक्षस्व माम्।।

कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपाल स्वामी का ब्रह्मोत्सव

दि.19-05-2025 से दि.27-05-2025 तक

दि. 15-03-2025 को आं.प्र. में स्थित अमरावति में वेंकटपालेम् प्रांत में ति.ति.दे. के द्वारा श्री वेंकटेश्वरस्वामी का कल्याणोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया।

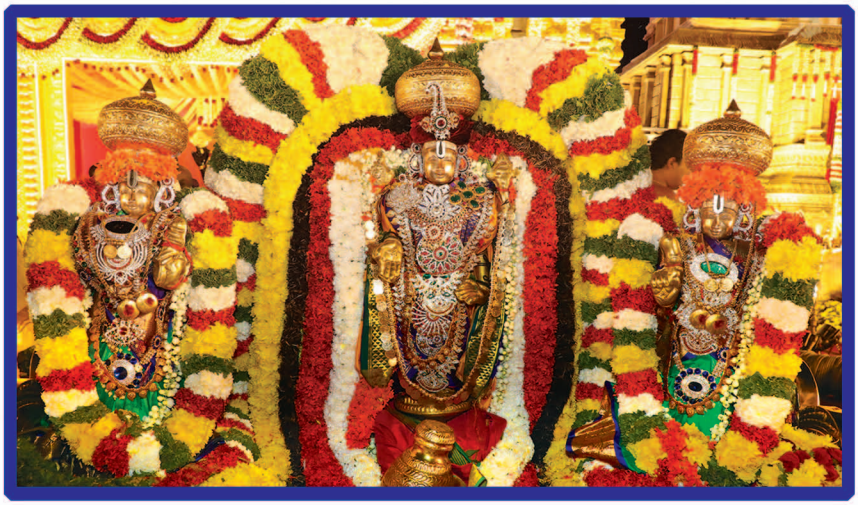

आं.प्र., अमरावति, वेंकटपालेम् प्रांत में भगवान बालाजी का आं.प्र. माननीय राज्यपाल श्री एस.अब्दुल नजीर जी, धर्मपत्नी सहित आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबूनायडू जी ने पधाकर, भगवानजी का दर्शन किया। इस संदर्भ में माननीय राज्यपाल जी को, माननीय मुख्यमंत्री जी को भगवानजी का तीर्थ प्रसाद, चित्रपठ को देते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्याचौदरी, आई.आर.एस.। श्री वेंकटेश्वरस्वामी का कल्याणोत्सव के अवसर पर उसी दिन सायंकाल में आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबूनायडू जी ने भगवानजी को पवित्र रेशमी वस्त्र समर्पित किया। इस कार्यक्रम में आं.प्र. का धर्मस्व शाखा मंत्री, ति.ति.दे. श्रीश्रीश्री बडाजीयरस्वामीजी, श्रीश्रीश्री छोटेजीयरस्वामीजी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य गण आदि अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२६)

किंतु यदि तू इस आत्मा को सदा जन्मनेवाला तथा सदा मरनेवाला मानता हो, तो भी हे महाबाहो! तू इस प्रकार शोक करने के योग्य नहीं है।

ब्रह्म कडिगिन पादमु
ब्रह्ममु ताने नी पादमु

चेलगि वसुध गोलिचिन नी पादमु
बलि तलमोपिन पादमु
तलकक गगनपु तन्निन पादमु
बलरिपु गाचिन पादमु ।।ब्रह्म।।

कामिनि पापमु कडगिन पादमु
पामुतलनिडिन पादमु
प्रेमपु श्रीसति पिसिकेडि पादमु
पामिडि तुरगपु पादमु ।।ब्रह्म।।

परम योगुलकु परि परि विधमुल
परमोसगेडि नी पादमु
तिरुवेंकटगिरि तिरमनि चूपिन
परम पदमु नी पादमु ।।ब्रह्म।।

श्री वेंकटेश के चरण की महत्ता का वर्णन किया गया है। इस चरण को स्वयं ब्रह्म ने धोया है। यह तो स्वयं 'ब्रह्म' है। बलि के सर पर रखकर 'वसुधा' को इसी चरण ने नापा था। गगन को एक ही कदम से धक्का देकर, रिपु बलि की रक्षा भी इसने की। देवेन्द्र के वृत्तांत में शापग्रस्त अहल्या के पाप को धोकर उसे विमुक्त करना तथा कालिंदी नदी में 'सर्पराज' के घमंड को चकनाचूर करना - इसी चरण की विजय गाथाएँ हैं। श्री लक्ष्मीजी इस चरण की सेवा सदा करती है। तुरग पर आरूढ़ होनेवाला चरण भी यही है। योगि श्रेष्ठों को अनेक रीतियों में मोक्ष प्रदान करनेवाले इसी चरण ने मुझे मोक्ष द्वार तिरुवेंकटगिरि का दर्शन करवाया है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

ऋषिकेश, नारायणवनम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
(2025 मई 11 से 19 तक)

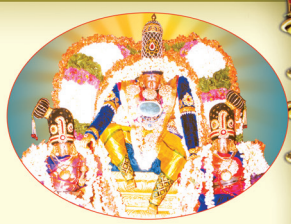

11-05-2025 रविवार दिन - ध्वजारोहण रात - महाशेषवाहन	12-05-2025 सोमवार दिन - लघुशेषवाहन रात - हंसवाहन	13-05-2025 मंगलवार दिन - सिंहवाहन रात - मोतीवितानवाहन
14-05-2025 बुधवार दिन - कल्पवृक्षवाहन रात - सर्वभूपालवाहन	15-05-2025 गुरुवार दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव रात - गरुडवाहन	16-05-2025 शुक्रवार दिन - हनुमन्तवाहन रात - गजवाहन
17-05-2025 शनिवार दिन - सूर्यप्रभावाहन रात - चंद्रप्रभावाहन	18-05-2025 रविवार दिन - रथ-यात्रा रात - अश्ववाहन	19-05-2025 सोमवार दिन - चक्रस्नान रात - ध्वजावरोहण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

कार्वेटिनगरम्
श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
(2025 मई 19 से 27 तक)

19-05-2025 सोमवार दिन - ध्वजारोहण रात - महाशेषवाहन	20-05-2025 मंगलवार दिन - लघुशेषवाहन रात - हंसवाहन	21-05-2025 बुधवार दिन - सिंहवाहन रात - मोतीवितानवाहन
22-05-2025 गुरुवार दिन - कल्पवृक्षवाहन रात - सर्वभूपालवाहन	23-05-2025 शुक्रवार दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव रात - गरुडवाहन	24-05-2025 शनिवार दिन - हनुमन्तवाहन रात - गजवाहन
25-05-2025 रविवार दिन - सूर्यप्रभावाहन रात - चंद्रप्रभावाहन	26-05-2025 सोमवार दिन - रथ-यात्रा रात - अश्ववाहन	27-05-2025 मंगलवार दिन - चक्रस्नान रात - ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-55 मई-2025 अंक-12

विषयसूची

नरसिंह जयंती	डॉ.एच.एन.गौरीराव	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	11
कूर्म अवतार की महानता	डॉ.रमेश कृष्णा	15
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	20
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	23
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
श्री हनुमान (आंजनेय) का पूजा विधान		27
श्री हनुमान जयंती	श्री ज्योतिन्द्र के. अजवालिया	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	33
ऋषि दुर्वासा	डॉ.जी.सुजाता	35
सरमा	डॉ.के.एम.भवानी	38
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	40
श्रीराम की शरणागति हेतु हनुमान का योगदान	श्री कमलाप्रसाद चौरसिया	43
आध्यात्मिकता... आरोग्य	श्री वेमुनूरि रोजमौलि	45
मई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - तीन रत्न	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - चुगलखोरी की बातें सुनने का नतीजा	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 34		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री वेणुगोपालस्वामी, कार्वेटिनगरम्।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री नृसिंह भगवान का चित्र (चित्रकार - श्री मणियम सेल्वन्)।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.,
P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

माधव मास : आध्यात्मिकता और आस्था का उज्ज्वल पर्व

समय एक अविरल प्रवाह है, जिसे कोई भी रोक नहीं सकता। सूर्योदय और सूर्यास्त की गति से ही हमारे जीवन की घड़ियाँ जुड़ी हुई हैं। इस निरंतर प्रवाह में, समय को काल पुरुष के रूप में दर्शाया गया है। भारतीय कालचक्र में प्रत्येक मास का अपना एक विशेष स्थान और आध्यात्मिक महत्व होता है। मार्गशीर्ष मास के बाद जिस मास को अत्यधिक पावन माना जाता है, वह है वैशाख मास, जिसे माधव मास भी कहा जाता है। यह मास भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है और इसे जीवन में आध्यात्मिक जागरण और आत्मसमर्पण का संदेश देने वाला मास माना जाता है।

इस मास की महिमा को और अधिक विशेष बनाती हैं इस में पड़ने वाली महत्वपूर्ण तिथियाँ। सबसे पहले आता है नरसिंह जयंती, जब भगवान श्रीहरि ने नरसिंह अवतार धारण कर भक्त प्रह्लाद की रक्षा की और अहंकारी राक्षस हिरण्यकशिपु का वध किया। इस कथा में भगवान की सर्वव्याप्ति और सर्वशक्तिमत्ता का संदेश छिपा है।

इसी मास में हनुमान जयंती भी मनाई जाती है। हनुमानजी, जो स्वयं परम शक्ति के धनी थे, फिर भी उन्होंने दास्यभाव को अपनाकर भगवान श्रीराम की सेवा की। उनकी भक्ति निस्वार्थ थी, और उन्होंने यह सिद्ध किया कि सेवा में ही सच्ची महानता है।

आदिशंकराचार्य जी भी इसी मास में अवतरित हुए थे। उन्होंने ''अहं ब्रह्मास्मि'' के अद्वैत सिद्धांत की व्याख्या की और साथ ही भक्तों को यह सिखाया कि सगुण भक्ति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा रचित भज गोविन्दम, शिवानंद लहरी, सौंदर्य लहरी और कनकधारा स्तोत्र आज भी आध्यात्मिक पथ के साधकों को दिशा प्रदान करते हैं।

इसी तरह, भगवद्रामानुजाचार्य ने विशिष्टद्वैत वेदांत को प्रचारित किया और अनन्य शरणागति का संदेश दिया। इस मास में महान संत नम्माल्वार और अन्नमाचार्य का स्मरण भी किया जाता है। अन्नमाचार्य के भक्ति पद श्री वेंकटेश्वर की महिमा का गुणगान करते हैं और यह सिखाते हैं कि सभी जीवात्माएँ एक परमात्मा की शरण में हैं। वेंगमांबा द्वारा लिखित श्री वेंकटाचल माहात्म्यम् ग्रंथ अत्यंत सुप्रसिद्ध ग्रंथ है। वेंगमांबा मुत्याल आरति तिरुमल मंदिर में हर दिन देना एक संप्रदाय बना है।

इस मास में गृह प्रवेश, देवता प्रतिष्ठा, उपनयन संस्कार जैसे शुभ कार्य किए जाते हैं। इसे स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी अनुकूल माना जाता है। इस मास में प्रतिदिन एक समय भगवान विष्णु का स्मरण करना अत्यंत फलदायी माना गया है।

तिरुपति बालाजी मंदिर, तिरुचानूर पद्मावती देवी मंदिर, ऋषिकेश, नारायणवनम्, जम्मलमडुगु और कार्वेटिनगरम् जैसे स्थानों में इस दौरान भव्य उत्सव मनाए जाते हैं। तिरुमल तिरुपति देवस्थानम (टी.टी.डी.) द्वारा आयोजित इन आयोजनों में श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

माधव मास आध्यात्मिक जागरण का मास है, यह हमें भक्त प्रह्लाद, हनुमानजी आदिशंकराचार्य, रामानुजाचार्य और संत अन्नमाचार्य, वेंगमांबा जैसे महान विभूतियों की भक्ति और समर्पण का संदेश देता है। यह मास हमें याद दिलाता है कि जीवन में सच्ची उपलब्धि आत्मसमर्पण, भक्ति और निस्वार्थ सेवा में ही निहित है। आइए, इस पावन माधव मास में भगवान श्रीहरि की भक्ति में मन को अर्पित करें और उनके अनुग्रह के पात्र बनें।

नरसिंह जयंती

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

नरसिंह अथवा नृसिंह अवतार भगवान विष्णु का चौथा अवतार है। यह अवतार श्रीहरि के अन्य अवतारों से भिन्न है। वे इस अवतार में आधा सिंह और आधा मनुष्य के रूप में प्रकट होते हैं। नरसिंह अवतार से पहले भगवान विष्णु के सभी अवतार प्राणियों के रूप में हुए थे। नरसिंह अवतार के बाद सभी अवतारों में वे मानव के रूप में जन्म लेते हैं। भगवान नरसिंह किसी मानव के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। वे केवल अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए तथा दुष्ट हिरण्यकशिपु को अंत करने के लिए प्रकट होते हैं, जिससे लोक कल्याण भी हुआ। नरसिंह अवतार तथा उनके माहात्म्य का वर्णन विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, स्कंद पुराण, नरसिंह पुराण तथा महाभागवत में किया गया है। नरसिंह अवतार कृतयुग के चौथे चरण में हुआ था।

पूर्व कथा

हिरण्यकशिपु जिस प्रकार श्रीहरि का कट्टर शत्रु बना उसके संबंध में एक पूर्वकथा है। जय और विजय नामक दो भाई श्री महाविष्णु के निवास वैकुंठ में श्रीहरि की सेवा करते हुए द्वारपालक बनकर सुरक्षा काम करते थे। वे महाविष्णु के परम भक्त थे। एक बार सनकादि मुनि (सनक, सनंद, सनातन, सनत्कुमार) महाविष्णु से मिलने वैकुंठ आते हैं। पर यहाँ के द्वारपालक जय-विजय उन्हें अंदर नहीं जाने देते। अपना परिचय देने पर भी वे वही द्वार पर मुनियों को रोकते हैं। इससे सनकादि मुनि क्रोध में आकर उनको शाप देते हैं- 'हे द्वारपालक! तुम दोनों विष्णु से दूर रहकर हरिद्वेषी बनकर राक्षसों जैसा जीवन व्यतीत करे।' अब जय-विजय पश्चाताप करने लगे और शाप विमोचन की प्रार्थना करने लगे। तुरंत महाविष्णु वहाँ आकर द्वारपालकों द्वारा हुए अपमान के लिए ब्राह्मणों से क्षमा मंगते है। उन्होंने दोनों द्वारपालकों को सांत्वना देते हुए कहा कि 'मुनियों के शाप को कोई भी टाल नहीं सकते। तुम दोनों को केवल तीन जन्मों तक शाप को भुगतना पड़ेगा। परंतु सभी जन्मों में मैं ही आप को मुक्ति दिलाऊंगा।

मुनियों के शाप के अनुसार जय-विजय दोनों कृतयुग में पहले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु बनकर लोगों पर अत्याचार करने लगे। भगवान विष्णु ने हिरण्याक्ष को वराह अवतार में और हिरण्यकशिपु को नरसिंह अवतार में वध किया। त्रेतायुग में जय-विजय दोनों रावण और कुंभकर्ण के रूप में जन्म लिए थे। इनके अत्याचार बढ़ने से भगवान विष्णु ने रामावतार में दोनों का संहार किया। तीसरे जन्म में

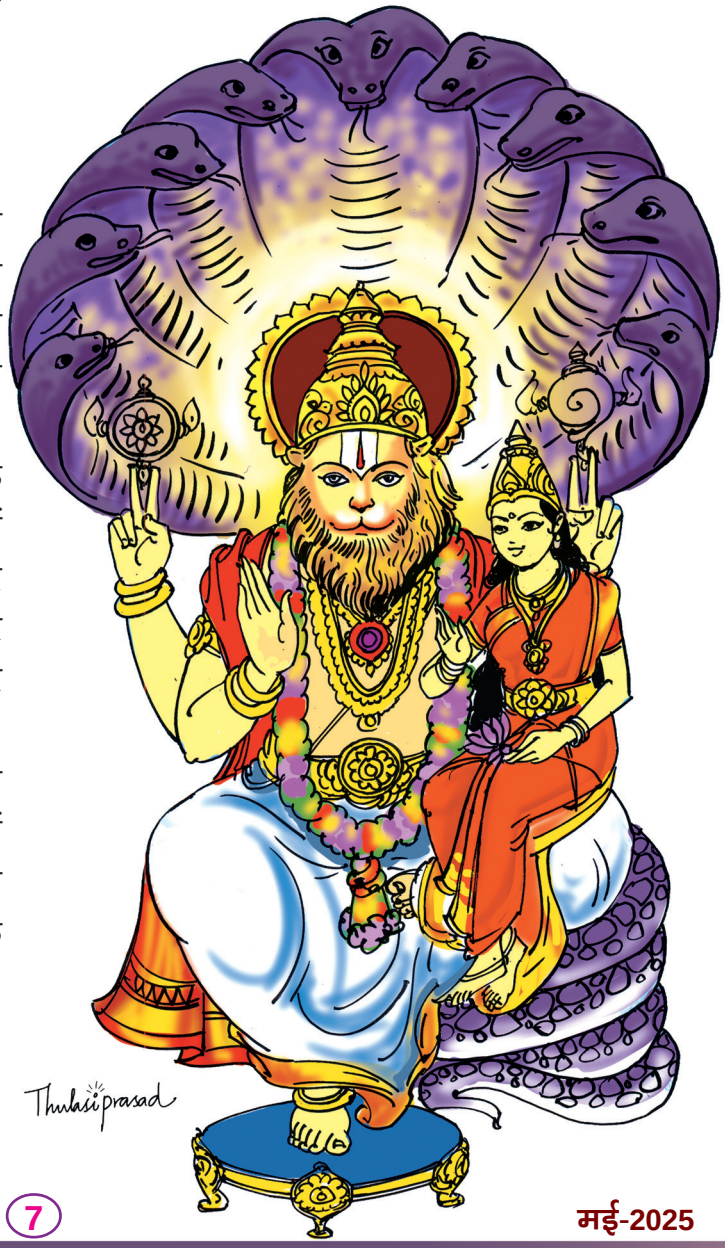

दोनों शिशुपाल तथा दंतवक्र बनकर लोगों पर हिंसा करते थे। इससे इन दोनों का संहार स्वयं विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण ने किया था। जय-विजय दोनों तीनों जन्मों में विष्णु से अत्यंत द्वेष करते थे। सदा महाविष्णु को दूषित करते करते उनका ही स्मरण करते थे। अंत में भगवान विष्णु से ही इनको मुक्ति मिली।

हरि द्वेषी हिरण्यकशिपु

कृतायुग में ऋषि कश्यप और दिति के दो पुत्र थे- हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु जो असुरी प्रकृति के थे और चारों ओर खूब अत्याचार करते थे। इससे लोग त्रस्त होकर दीनता से भगवान से प्रार्थना करने लगे। तब भगवान विष्णु ने हिरण्याक्ष के पास बंदी बनकर रहने वाली पृथ्वी की रक्षा के लिए वराह रूप में हिरण्याक्ष का वध किया। अपने भाई की मृत्यु से हिरण्यकशिपु बहुत दुखी था। विष्णु द्वेषी बनकर अधिक शक्तिशाली तथा अजेय बनने के लिए राक्षस गुरु शुक्राचार्य की सलाह के अनुसार उसने ब्रह्म की घोर तपस्या की। इस तपस्या से देवता भी डरने लगे। इंद्र तो हिरण्यकशिपु की अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुए हिरण्यकशिपु की पत्नी कयाधु को गर्भवती होने पर भी बंदी बनाकर स्वर्ग लोक ले गया। परंतु नारद महर्षि के हित वचन सुनकर उसे छोड़ दिया। तब नारद महर्षि कयाधु के गर्भस्थ शिशु को हरि नाम स्मरण सुनाकर जन्म से पहले ही उसे हरि भक्त बनाया।

हिरण्यकशिपु की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी उनके सामने प्रत्यक्ष हुए और वर मांगने को कहा। तब हिरण्यकशिपु ने एक ऐसा वर मांगा ताकि किसी के साथ उसका वध न हो। उन्होंने मांगा कि उसका वध न किसी देवता से, या न किसी मनुष्य से, या न किसी राक्षस से, या न किसी प्राणी पक्षी से हो; न भूमि पर, न आकाश में, न पानी में, न अग्नि में, न वायु में हो; न स्वर्ग में, न पाताल में हो, न दिन में, न रात में हो; न घर के अंदर या न घर के बाहर हो; न किसी हथियार से हो। ब्रह्माजी ने उसे वर को दे दिया।

इस वर प्राप्ति के बाद हिरण्यकशिपु और दुष्ट बन गया। वह त्रिलोक स्वामी बनना चाहता था। तीनों लोकों में रहने वाले लोगों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया और हरि भक्तों को सताने लगा। वह अहंकारवश स्वयं अपने को देवता मानने लगा और अपने राज्य में एक ऐसा शासन को लागू किया कि उसके सिवा और किसी की पूजा न हो। इससे लोग बहुत परेशान थे।

हिरण्यकशिपु अपने पुत्र प्रह्लाद के जन्म के बाद अत्यन्त प्रसन्न था। पर उसे मालूम नहीं था कि वह हरि भक्त है। प्रह्लाद आरंभ से ही धार्मिक प्रवृत्ति का था। जैसे-जैसे वह बड़ा होकर बालक बना तब हिरण्यकशिपु को यह मालूम हुआ कि वह हरि के सिवा और किसी को भगवान नहीं मानता। प्रह्लाद अन्य बालकों से भिन्न हमेशा हरि नाम का उच्चारण करता था; उसके स्मरण में तन्मय हो जाता था।

प्रह्लाद पर हिरण्यकशिपु के अत्याचार

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद की भगवान विष्णु पर आस्था को मिटाने के लिए हर संभव प्रयास किया। पहले अत्यंत प्यार से उसे समझाने केलिए शत-शत प्रयत्न किया। पर प्रह्लाद ने हरि को ही भगवान कहा। उल्टा उसने अपने पिता को ही हरि भक्त बनने की सलाह दी। इससे हिरण्यकशिपु ने उसको अपने कुलगुरु चंडमार्क के गुरुकुल में भेजा ताकि वहां शिक्षा प्राप्त कर हरि को भूल सके। पर बालक प्रह्लाद अन्य असुर विद्यार्थियों को भी हरि भक्त बनाया। इससे हिरण्यकशपु गुस्से में आकर निरंतर प्रह्लाद पर तरह-तरह के अत्याचार और बल प्रयोग करता है, तब भी भक्त प्रह्लाद विष्णु भगवान को ही सर्वोपरि माना।

उसने प्रह्लाद को मारने की कोशिश में उसे उबलते हुए तेल में डलवा दिया था; ऊँचे पहाड़ से धकेल कर मारने की कोशिश की; कर्कोटक विष पिलाया; हाथी से कुचलवाने की कोशिश की; अंक में उसने प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी बहन होलिका की मदद मांगी। कुटिल योजन के अनुसार होलिका प्रह्लाद को अपनी गोद

में बिठाकर अग्नि कुंड में बैठ गई। पर प्रह्लाद पूर्ण विश्वास के साथ हरि नाम स्मरण करता रहा। आग में होलिका जलकर भस्म हो गई। प्रह्लाद बिना किसी नुकसान से हंसते हुए बाहर आया। प्रह्लाद के भगवान विष्णु पर अटूट विश्वास के कारण विष्णु ने हर एक मुसीबत में उसको बचाया।

नरसिंह अवतार का प्रकट होना

जब बहन होलिका की मृत्यु हो गई तो हिरण्यकशिपु का खून खौल उठा। उसने बालक प्रह्लाद को घसीट कर राजमहल में ले आया और अपने कर्कश ध्वनि से पूछा कि 'तुम हरि हरि कहते हो न, तो कहा है तुम्हारा हरि?' बालक प्रह्लाद ने कहा- 'हरि सर्वान्तर्यामी है। वह चराचर जगत में व्याप्त है, पिताश्री।' तब क्रोध से उन्मत हिरण्यकशिपु ने राजमहल के एक स्तंभ को दिखाकर पूछा कि 'हे मूर्ख! इसमें है क्या तुम्हारा हरि' बालक ने जवाब दिया, 'जी हाँ! भगवान जग के कण-कण में व्याप्त है तो इस स्तंभ में भी

है, पिताश्री।' उस समय अपमान तथा क्रोध के कारण हिरण्यकशिपु का मुख देखने में भयंकर लगता था और उसने उसी क्रोध से तमतमाते हुए अपने गदायुध से अपनी पूरी शक्ति के साथ स्तंभ पर प्रहार किया। तब चारों ओर का वातावरण बदल गया। वहां उपस्थित सब भयभीत होकर चौंककर देखते रह गए। स्तंभ फट गया। तब संध्या का समय था (न दिन न रात)। इस समय भगवान नरसिंह स्तंभ से बाहर आये (न मनुष्य, न देवता, न राक्षस, न मृग)! शरीर के ऊपर का भाग सिंह का था और नीचे का भाग मनुष्य जैसा था। नरसिंह का रौद्र रूप था। सिंह गर्जना दूर-दूर तक सुनाई पड़ती थी। नरसिंह को देखकर हिरण्यकशिपु भी डर गया। उन से बचने के लिए इधर-उधर भागने लगा। पर भगवान उसको पकड़ कर राजमहल के द्वार के देहली पर बैठ गये (न अंदर, न बाहर)। उन्होंने हिरण्यकशिपु को अपनी गोद में रखे (न जमीन, न आसमान, न पानी, न अग्नि, न वायु) और उसके पेट को अपने वज्रसम नखों से फाड़ डाला (न कोई आयुध); उसके रक्त रंजित आंतों को अपने गले में माला जैसा पहना। इस प्रकार भगवान नरसिंह ने हिरण्यकशिपु के वरदान की सभी शर्तों का पालन करते हुए उस अत्याचारी का अंत किया। हिरण्यकशिपु का अंत होने पह भी नरसिंहस्वामी शांत नहीं हुए। वहाँ उपस्थित सब लोग उन्हें शांत होने की प्रार्थना की। अंत में प्रह्लाद की स्तुति से भगवान नरसिंह शांत हो गए। अपने भक्तों के लिए भगवान उदारी और भक्त वत्सल है।

नरसिंह जयंती आचरण विधि

जिस दिन भगवान नरसिंह का आविर्भाव हुआ उस दिन को नरसिंह जयंती के रूप में उत्सव मनाया जाता है। हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को नरसिंह जयंती मनाई जाती है। यह अवतार प्रदोष काल (संध्या समय) में हुआ था, इसलिए शाम को भगवान नरसिंह की विशेष पूजा होती है। उस दिन सुबह को श्रद्धालु घर पर स्नान करके निष्ठा के साथ भगवान की पूजा करते है। सुबह से शाम तक उपवास को रखते हैं। शाम को मंदिर जाकर भगवान के दर्शन के बाद प्रार्थना करते हैं।

नरसिंह जयंती के दिन नरसिंह के मंदिरों को विशेष रूप से अलंकृत किया जाता है। फूलों और दीपों से मंदिर जगमगाता है। भक्त भी भक्ति और संभ्रम के साथ नरसिंह जयंती में भाग लेते हैं। सभी वैष्णव मंदिरों में खासकर नरसिंहस्वामी के मंदिरों में भगवान का अभिषेक, षोडशोपचार पूजा के बाद स्वामी का रूप रौद्र होने से उन्हें शीतलता देने के लिए विशेष रूप से चंदन को चढ़ाया जाता है। फूलों से अलंकृत किया जाता है; नैवेद्य

समर्पण किया जाता है; दीप चढ़ाया जाता है; नरसिंहस्वामी के स्तोत्र का पाठन किया जाता है। ज्ञान और शक्ति पाने के लिए भगवान नरसिंह की पूजा की जाती है। जो भी इस दिन भगवान का व्रत रखेगा, वह सभी तरह के दुखों से दूर रहेगा। नरसिंह जयंती के दिन निम्नलिखित स्तोत्र पड़ेंगे तो उनको जीवन में शांति और समृद्धि मिलती है-

''ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।''

इस श्लोक का अर्थ यह है - 'आप उग्र तथा शौर्यवान महाविष्णु का रूप है। आप ज्वलंत अग्नि के समान प्रकाशमान तथा सर्वव्यापी है। हे नारसिंह! आप का रूप भयानक होने पर भी आप ही शुभ करनेवाले है। आप मृत्यु के लिए भी मृत्यु है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।' इस मंत्र के पठन से शत्रु भय का नाश होता है।

भगवान नरसिंह के मंदिर

भगवान नरसिंह के मंदिर कई जगहों पर हैं। मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर ज़िले में नरसिंहजी का एक अद्भुत मंदिर है। उत्तराखंड के चमेली में 1200 साल पुराना मंदिर, नृसिंह बदरी भी कहा जानेवाला जोशीमठ नरसिंह मंदिर, छत्तीसगढ़ के रायपुर में 1000 साल पुराना मंदिर और उत्तर का पद्मनाभ मंदिर कहा जानेवाले इटावा में नरसिंह जी का मंदिर आदि प्रसिद्ध है। इनके अलावा राजस्थान के हिंडौन में, उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में, मयुरापुरी में जाने वाले नरसिंहस्वामी मंदिर है। दक्षिण भारत में भी सुप्रसिद्ध नरसिंह मंदिर है। तेलंगाना में यादगिरिगुट्टा श्री नरसिंहस्वामी, आंध्रप्रदेश में अहोबिलम तथा कदिरि में नरसिंहस्वामी का मंदिर, विशाखपट्टनम में सिंहाचलम मंदिर, कर्नाटक में मेल्कोटे और देवरायन दुर्गा में नरसिंह मंदिर आदि शक्तिशाली मंदिर है।

नरसिंह जयंती का महत्व

नरसिंह पुराण में नरसिंह की महानता तथा नरसिंह जयंती के महत्व का वर्णन किया गया है। बुराई पर अच्छाई की जीत तथा अज्ञान को नाश करनेवाले के प्रतीक के रूप में नरसिंह जयंती मनाया जाता है। इस अवतार के माध्यम से स्पष्ट होता है कि जो भी भक्त भगवान को सर्वोपरि मानकर उस पर पूर्ण विश्वास रखता है तो शत्रु जितना भी बुद्धिमान तथा शक्तिशाली होने पर भी अवश्य नरसिंह भक्त की रक्षा करेगा। ये सभी विशेषताएँ नरसिंह तत्व है। भगवान की कृपा से वह अपने जीवन की नकारात्मक शक्तियों से छुटकारा पा सकते हैं। वे कई बड़ी बीमारियों से भी बच सकते हैं। एक बार जगत्गुरु आदिशंकराचार्य के हाथ जल गए। लेकिन वे भगवान नरसिंह की स्तुति करके ठीक हो गये। वो स्तोत्र है- 'लक्ष्मी नरसिंह करावलम्ब स्तोत्रम।' इस वर्ष श्री नृसिंह जयंती रविवार, 11 मई 2025 को मनाई जाएगी।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

आकाश राज का चरित :

तदुपरांत चंद्र वंशज पांडव दौहित्र वंश में सुवीर नामक एक राजा पैदा होकर सुपालन करते रहे। उसे सुधर्म नामक पुत्र पैदा हुआ। कुछ सालों के बाद सुवीर ने सुधर्म को राजा बनाकर सद्गति को प्राप्त किया। सुधर्म ने अच्छे ढंग से राज्य पालन कर रहे थे। तब पूर्व में वेंकटाद्री आकर पाप मुक्त होकर ब्रह्म के द्वारा वरदान प्राप्त करनेवाले माधव नामक ब्राह्मण वेंकटाद्री की यात्रा करके स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके, वराहस्वामी के दर्शन करके वहीं उसने तप किया था। वहीं पर अपने शरीर को छोड दिया था। वह माधव सुधर्म के जेष्ठ पुत्र के रूप में पैदा हो गया। उस का नाम आकाश राज रखा गया था। पूर्व में उस माधव की धर्मपत्नी के रूप में पैदा हुई सुरेखा नामक स्त्री पति की अच्छी सेवा करके कालांतर में देह-मुक्त हो गयी। वही फिर धरणी देवी नाम से पैदा हो गयी। सुधर्म ने अपने पुत्र आकाश राज का विवाह इस धरणी देवी के साथ किया। यह बताकर सूत ने आगे इस रूप में बताया।

उसके बाद एक दिन सुधर्म महाराज आखेट खेलने वन में गए। आखेट खेलते वे थक गए। एक सुंदर सरोवर के पास वे गए। वहाँ पर एक सुंदर नाग कन्या को देखकर उस पर मोहित हो गए। विवाह करने के लिए उससे बहुविध प्रार्थनाएँ कीं। उसने अस्वीकार करते हुए इस रूप में कहा। ''हे राजन! तुम मानव हो। मैं नाग कन्या हूँ। इसलिए हमारा दांपत्य कैसे होगा। तुम अपना रास्ता नापो।'' कहते वह चली गयी। उसे छोडने में असमर्थ राजा बार-बार उससे प्रार्थना की। वह कन्या राजा पर दया करके अलग जाने की जगह राजा से पूछा। ''तुम कौन हो?'' पूछने पर नृपति ने अपने कुल, गोत्र, नाम आदि के साथ-साथ अपने को राजा के रूप में बताया। तब उस नाग कन्या ने राजा की ओर देखकर कहा। ''हे भूनाथ! तुम को पैदा होनेवाला पुत्र नाग लोक में होगा। मेरा पिता कौन है? ऐसा सवाल वह करेगा। तो उस कैसा जवाब देना है। तुम ही बताओ।'' तब सुधर्म ने इस रूप में कहा। ''तुम को अगर पुत्र पैदा होकर तुम से पूछेगा तो मेरा नाम बताकर मेरे पास भेज दो। उसे मैं अपना आधा राज्य दे दूँगा।'' कहते प्रमाण के रूप में अपनी अंगूठी को उसे दे दिया। बाद में वे अपने नगर में लौट आये। बाद में नाग लोक जानेवाली नाग कन्या ने गर्भ धारण किया। नाग लोक राजा को इस का पता चलने पर भी उसने कुछ नहीं कहा। उल्टा पुत्री की गर्भवती बनना उसे अच्छा लगा।

तोंडमान का चरित :

नाग कन्या के गर्भ से श्रीकर चक्रवर्ती चिह्नों के साथ एक शुभ लग्न में एक सुंदर पुत्र का जन्म हो गया। नित्य प्रति उस का विकास होता रहा। एक दिन उस बालक ने अपनी माँ से पूछा 'माँ! मेरे पिताजी कौन है?' सुन कर नागकन्या अंदर ही अंदर हँसते हुए बालक को गोद में लेकर लालन करते हुए कहा। ''हे पुत्र! तुम्हारे पिता का नाम सुधर्म राजा है। पृथ्वी पर बहुत बडा शासन करनेवाले राजा है। उन के पास तुम को निर्भय होकर जाना चाहिए। वहाँ जाकर तुम सुख प्राप्त करो पुत्र। तुम्हारे पिताजी तुझे आधा राज्य देंगे। आधा राज्य प्राप्त करके हे पुत्र! तुम धर्मानुसार शासन करो। मेरा स्मरण करते रहो। यहाँ तुझे कोई काम नहीं है। तुम अब अपने पिताजी के पास जाओ। अच्छे उपदेश देकर दुलार करते हुए जाने वाले मार्ग के बारे में भी उस ने बताया। तब बालक अपने मातामह नागराज को नमस्कार करके, बाकी भुजंगों को भी प्रणाम करके उन से आशीर्वाद प्राप्त करके, अपनी माँ को दंड-प्रणाम करके पाताल बिल के मार्ग से आने लगे। तब उसकी माँ अपने पुत्र को लेकर पृथ्वी के ऊपर तक आकर, सुधर्म राजा के द्वारा दी गयी अंगूठी को अपने पुत्र को दिया। पुत्र की उंगली पर उसे पहनायी। उसका पुत्र फिर उसे पुनःप्रणाम करने पर माँ ने आशीर्वाद दिया। 'दीर्घायु बन कर, हरि का भक्त बन कर, चक्रवर्ती बन कर जगत्प्रसिद्ध बनो।' आशीष देकर सिर पर सहलाकर, लाड प्यार से गाल पर चुंभन लेकर अपने पुत्र को नाग कन्या ने बिदा किया। फिर वह अपने पाताल लोक चली गयी। तब बालक नारायणपुर पहुँच कर सुधर्म राजा के पास गया। राजा को नमस्कार करनेवाले बालक को देखकर सुधर्म ने पूछा। 'हे लाडले पुत्र! मुझे क्यों नमस्कार करके यहाँ खडे हो गए हो? तुम कौन हो? तुम्हारे माता-पिता कौन है?'' बालक निडर होकर ''हे नरनाथ! मेरी माँ नाग कन्या है। पिता सुधर्म महाराज है।'' स्पष्ट रूप से कहा। फिर माता के द्वारा दी गयी अंगूठी को दिखाया। उस अंगूठी को देखकर राजा ने अपने मंत्री, पुरोहित, बंधु मित्रादि को उसे दिखाकर, पूर्व में नाग कन्या के साथ किए गए वृत्तांत को बताया। नाग कन्या को अंगूठी देने की बात भी बतायी। उन सब को सब कुछ बताकर अपने पुत्र को सादर और प्रेम के साथ उसे तोंडमान नाम रखा। तदुपरांत सुधर्म अपने पुत्र तोंडमान को उपनयन, विवाह आदि संस्कार करके बहुत सुखी रहे। कुछ समय के बाद अपने पुत्र आकाश राज को राजा बनाकर और तोंडमान को युवराज बना कर सुधर्म राजा ने मुक्ति प्राप्त की। तब आकाश राज और तोंडमान ने भिन्नोदर होते हुए भी अत्यंत स्नेह के साथ निजी भाईयों की तरह नारायण के भक्त बन कर सुज्ञानयुक्त होकर सुशासन किया। उन में जेष्ठ आकाश राज संतानहीन होने से चिंता करने लगा। एक दिन आकाश राज बृहस्पति को नमस्कार करके अपनी चिंता के बारे में बताया। ''हे सद्गुरुवर्य! मुझे संतान नहीं हुई है। पता नहीं मैं ने कौन से कर्म किए हैं? क्या कारण है। आप बताइए।'' राजा की इन बातों को सुन कर बृहस्पति ने कहा। ''तुम ने कितने भी पाप क्यों नहीं किया हो, उससे मुक्त होने का एक उपाय है। वह यह है कि तुम संतान की इच्छा से अचल भक्ति के साथ पुत्रकामेष्टि यज्ञ करो। तुम्हें पुत्र संतान होगी।'' इस रूप में बृहस्पति ने बहु हित वाक्य बताये। राजा ने उन्हें सुनकर उन को नमस्कार करके यज्ञ करने के प्रयत्न को शुरू किया। कनक हल के साथ भूमि को जोता।

पद्मावती का उदय :

कनक हल से भूमि को जोतने से भूमि से सहस्रदलवाले पद्म बाहर निकला। राजा ने उस सहस्रदल पद्म को देखा।

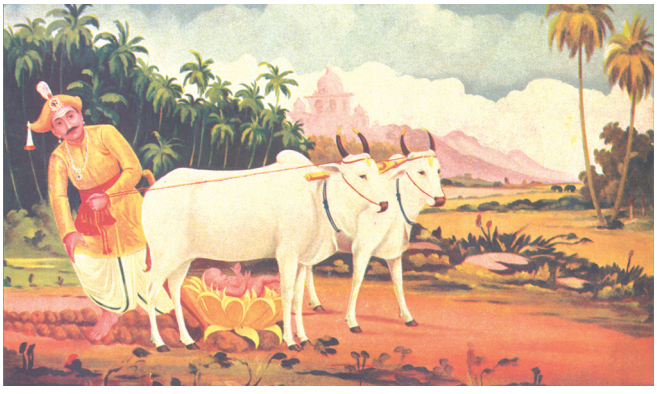

'धरती में इस सहस्र पद्म कैसे पैदा हो गया।' उसे निकाल कर देखने पर उस पद्म के मध्य में अद्भुत ढंग से एक बालिका दिखाई पडी। तब राजा ने सभी लोगों को बुलाकर भक्ति से पद्म में स्थित उस बालिका को सब को दिखाया। तब अशरीरवाणी ने कहा। ''हे राजा! बहुत अच्छा हुआ। तुम इस बालिका को अपनी संतान मान कर पालो। तुम्हारी जय होगी।'' इस रूप में अशरीरवाणी के बोलने से राजा ने उस बालिका को लेकर लाड प्यार देते हुए आदरता के साथ अपने मंदिर ले जाकर पत्नी को दिखाया। उन की पत्नी इस बालिका को पाकर बहुत आनंदित हुई। राजा ने अपनी पत्नी से इस रूप में कहा। ''सुनो यह बालिका अयोनिजा है। इस बालिका को हमें भगवान ने ही दिया है। संतोष के साथ अब इस बालिका का पालन-पोषण करो।'' इस रूप में बालिका के माता-पिता उसे बहुत लाड प्यार देते पाल पोष कर, बचपन की सारी क्रिडाओं से बहुत आनंद को प्राप्त किया। उस कन्या के अपने घर आने की मुहूर्त बल से आकाश राज की पत्नी गर्भवती हो गयी। सभी बुजुर्गों को बुलाकर राजा ने पाँचवें महीने में अपनी पत्नी का सीमंत महोत्सव करवाया। आकाश राज की पत्नी के नौ मास पूरे हो गए। 'दसवें महीने में कन्या राशि में, शुक्ल पक्ष, दशमी के दिन, रोहिणी नक्षत्र में, शुक्रवार के दिन एक शुभ मुहूर्त में संध्या के समय एक पुत्र पैदा हो गया।'

तब राजा ने स्नान करके संतोष के साथ ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें नव धान्य, धन, सहस्र धेनु, दस हजार घोडे, छत्र-चामरादि सकल वस्तुओं को शास्त्र प्रकार से दान दिया। अपने निज गुरु की पूजा करके तदनंतर नामकरण महोत्सव किया। पुत्र का नाम अनुदान रखा गया। पुत्री का नाम पद्मावती रखा गया। तब राजा ने अनेक सहस्र ब्राह्मणों को भोजन खिलाया। बहुत लाड प्यार से पुत्र और पुत्रिका का पालन-पोषण करने लगे। वे अच्छे ढंग से बडे होने लगे। मानो क्षीरसागर के मंदिर के मध्य में लक्ष्मी, चंद्र के समान आकाश राज के गृह मध्य में पद्मावती और अनुदान प्रकाशित हो रहे थे। राजा ने दोनों को सारी विद्याओं को सिखाया। पुत्र का उपनयन संस्कार करवाया। 'पद्मावती को क्या उचित वर प्राप्त होगा?' ऐसी चिंता करने लगे। उन्होंने अपने गुरु को बुलाकर अपनी चिंता के बारे में बताया।

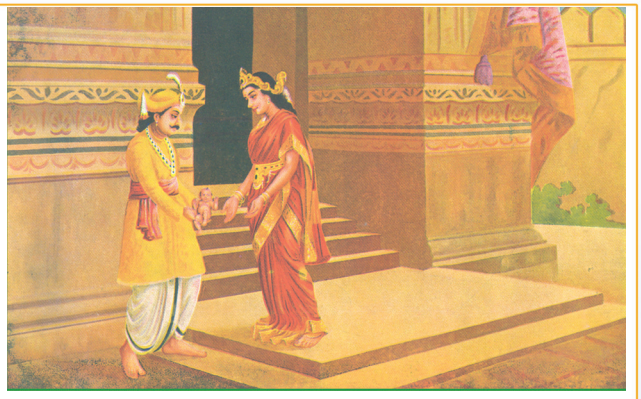

''हे पुण्यात्मा! गुरुचंद्र! पुत्रकामेष्टि आप की अनुमति से करते समय भूमि को जोतने पर तब वहाँ पद्म प्राप्त हुआ। उस पद्म में से बालिका प्राप्त हुई। उस बालिका का नाम पद्मावती रखा गया। क्या इस भूतल में ऐसी पद्मावती के लिए उचित वर प्राप्त होगा?'' राजा की इस चिंता को जानकर गुरु ने कहा। ''हे नृपति! तुम्हारी पुत्री के लिए भूतल में ही उचित वर प्राप्त होगा। हे राजन! आप संतोष के साथ रहिए।'' गुरु ने ऐसा आदेश देकर लौट गए। तब राजा पद्मावती को देखकर संतोष के साथ रहने लगे। अत्यंत लाड प्यार के साथ पालन-पोषण करने लगे। अपनी पुत्री को सुंदर दिव्य वस्त्र, अनेक भूषणों के श्रृंगार से शोभित देख कर वे बहुत आनंद का अनुभव कर रहे थे।

जनता के द्वारा पुण्यात्मा के रूप में प्रशंसित होकर आकाश राज धर्मानुसार शासन कर रहे थे। अपनी पत्नी और संतान के साथ बहुत सुखी रहने लगे थे। तब दूसरी ओर वेंकटाद्री विभ श्री वेंकटेश्वर पद्मावती के साथ विवाह करने को सोच रहे थे। पद्मावती ने नव यौवन में प्रवेश किया। तब वसंत ऋतु शुरू हो गयी। सारे वन और कानन फल-फूलने लगे। फूल खिलने लगे। उन फूलों पर भ्रमरों की झुंड मंडरा रही थी। वसंत ऋतु और इस प्रकार के मौसम में कोयल बोलने लगी। तोते-मैना बोलने लगे। पिक पक्षीगण कोंपलों को खाकर मद मत्त से कूकने लगे। फूलों पर बैठ कर भ्रमर मकरंद पान कर रहे थे। तोते पके फलों को खा रहे थे। सारे पक्षीगण अत्यंत उत्साह से कलरव ध्वनि कर रहे थे।

इस रूप में सारे श्रृंगार वन नेत्र पर्व लग रहे थे। पद्मावती अटारी से फूलों को बार बार देख रही थी। उस के मन में वन विहार करने की इच्छा पैदा हो गयी। अपनी सखियों से बात करके, उन्हें राजी करके अटारी से उतर कर माँ के पास आकर इस रूप में कहा। ''हे माँ! श्रृंगार वन अत्यंत सुंदर और कनक वनों की तरह लग रहे हैं। इसलिए मैं सखियों के साथ वहाँ जाकर आप के लिए अच्छे अच्छे फूल तोड लाऊंगी।'' पद्मावती की बातें सुन कर उस की माँ ने कहा। ''हे पुत्री! फूल तोडने तुम जाओगी तो सारे जन उसे देखकर हंसेंगे। तुझे वन में मैं जाने नहीं दूंगी। चाहे तो अपनी सखियों को भेजो। बडे-बडे पुष्प वे तोड कर लायेंगी।'' माँ की इन बातों को सुन कर पद्मावती रूठ गयी। पद्मावती चिंता मग्न होकर, बिना भोजन किए शय्या पर लौट गयी। पद्मावती के रूठने से उस की माँ ने आदरता से उसे बुलाकर उसे समझा-बुझाने की कोशिश की।

पद्मावती देवी का वन विहार :

अपनी सुंदर पुत्री को मनाने उसकी माँ ने इस रूप में कहा। ''वन में मत जाओ, कहने मात्र से तू रूठ गयी। उठो अब।'' तब उस की सखियों को और ब्राह्मण स्त्रियों को बुलाकर पद्मावती के साथ भेजते हुए जल्दी के साथ सकल वस्तुओं को सखियों को देकर बहुत सुंदर ढंग से अपनी पुत्री के वन विहार की तैयारी उस की माँ ने की। तब पद्मावती अपनी सखियों के साथ वन विहार पर चली गयी। वहाँ पर सुंदर, कमलों के सरोवर के पास पालकी उतर कर वन में विहार करने लगी। बडे उत्साह से फूलों को तोडने लगी। सखियों से मिल कर वह आनंदोत्सव कर रही थी। वह ऐसा है कि उत्साह से फूलों को तोड पर सखियों पर डाल कर हंसने लगी थी। मधुर फलों को बार बार काट कर सखियों को देने लगी थी। सखियों पर परिहास करते नीलकंठों से स्पर्धा करते हुए क्रीडा कर रही थी। राज हंस की तरह चलते सखियों को रिझा रही थी। जानबूझ कर पक्षियों की तरह कूक उठ रही थी। बार बार तोतों की तरह बोलने लगी थी। भृंगियों की तरह गाती वह मीन नयनी सब में उत्साह बढा रही थी। चमेली, पुन्नाग, मौलसिरि, जुही, संपंगी, गेंडे, मंदार आदि को बडे पैमाने पर तोड कर उल्लास से एक दूसरे पर फेंक रही थी। हठलाहट के साथ चलते, कर्कश व्यवहार करते, परिहास उपहास करते, पेडों के नीचे सखियों के साथ झूले झूलते, पलास फूलों की वसंत बना कर, सखियों को इकट्ठा करके, दांत की पिचकारियों से वसंत चिढकाकर अट्टाहास कर रही थी, धरती पर गिरे पुष्प-रेणुओं को इकट्ठा करके एक दूसरे पर फेंकते, हांफते, हंसते, बडबोली करते कमल सरोवर के पास खेल रही थी। उत्साह के साथ सरोवर में उतर कर जल क्रीडा करने लगी थी, तट पर चढ कर सब को समीप बुलाकर सब को साडियाँ दिलायी। उस के बाद सारी सखियाँ मिल कर पद्मावती को मृदुल वस्त्र से जल को पोंछ कर रेशमी लहंगा पहनायी एक सखी ने। सुंदर सुगंधित सरिगे फूलों की साडी को रेशमी लहंगे पर एक ने पहनाया। कटि बंध, कमर बंध एक ने बांधा। एक ने गोट के साथ रहनेवाली चोली पहनायी। भासुर नवीन आभरणों को सर्वांगों पर पहनाया एक ने। रेखिणी, केवडों के फूलों से चोटी बनायी एक ने, एक ने ललाट पर तिलक लगायी, एक ने आंखों में काजल लगाया, एक ने शरीर भर परिमल गंध लेप किया। चारों दिशाओं में सौरभ के फैलते जुही के चामरों से हवा भरी एक ने। इस रूप में पद्मावती का श्रृंगार करके उसे दिखाने दर्पण दिखाया एक ने। इस रूप में सखियों ने पद्मावती को सारे उपचार किया। तब पद्मावती ने सारी ब्राह्मण स्त्रियों को हल्दी, कुंकुम, फूलों की मालाएँ, फलादि भक्ति से समर्पित करके सत्कार किया। उन स्त्रियों ने तब पद्मावती को आशीर्वाद दिया। बाद में माँ के द्वारा भेजी चल्दियों से पंच भक्ष्य परमान्न सब को बांट कर भोजन किया। भोजन करके हाथ धोकर उस विलासवती के लिए वन के मध्य में बनायी गयी फूलों की शय्या पर बैठ कर पद्मावती ने सब को भेंट प्रदान की। तब वह आराम कर रही थी।

क्रमशः

कूर्म अवतार की महानता

- डॉ.रमेश कृष्णा

श्री महाविष्णु के अनेकानेक अवतारों में कूर्म अवतार एक महान विशेष महत्व रखता है।

संस्कृत शब्द 'कूर्म' का अर्थ है 'कछुआ'। विष्णु के कछुआ अवतार को भागवत पुराण जैसे उत्तर-वैदिक साहित्य में कच्छप, कमठ, अपराकु और अम्बुचर-आत्मना के रूप में भी संदर्भित किया गया है, जिनमें से सभी का अर्थ 'कछुआ' या 'कछुए' का रूप है।

व्याकरणविद यास्क द्वारा लिखित निरुक्त छह वेदांगों या 'वेदों के अंगों' में से एक है, जो वेदों की सही व्युत्पत्ति और व्याख्या से संबंधित है। कछुआ के लिए प्रविष्टि में कहा गया है- सूर्य को भी अकुपर अर्थात् असीमित कहा गया है, क्योंकि वह अथाह है। समुद्र को भी अकुपर अर्थात् असीमित कहा गया है, क्योंकि वह असीम है। कछुए को भी अ-कूप-आरा कहा गया है। क्योंकि वह कुएँ में नहीं चलता। कच्छप (कछुआ) इसलिए कहा जाता है कि वह अपने मुँह (कच्छप) की रक्षा (पति) करता है, या अपने खोल (कच्छेन) के द्वारा अपनी रक्षा करता है।

आमतौर पर हर एक यह जानते हैं कि समुद्र मंथन के समय देवताओं और दानवों की सहायता करने के उद्देश्य से महाविष्णु जी कूर्म यानी कछुए के रूप में आए और मंदर पर्वत को अपने पीठ पर रखकर देवताओं और दानवों की सहायता की और अमृत पाने में मददगार बने। लेकिन इस संदर्भ में यह जानना बहुत ही आवश्यक है कि पूर्ण अवतार सिर्फ एक अवतार नहीं है। भगवान विष्णुजी ने केवल कछुए के रूप में रहकर उनकी सहायता नहीं की बल्कि साथ-साथ वे मंदर पर्वत पर नागराज वासुकी में, देवताओं में,

राक्षसों में, इस प्रकार सब में अपनी-अपनी शक्ति को निक्षिप्त करके उन सब से समुद्र का मंथन करवाया और अमृत को क्षीरसागर से बाहर लाने में सफलीकृत हुए। इतना ही नहीं इतने कठोर परिश्रम के बाद मिले अमृत को सही व्यक्तियों के पास पहुँचाने के लिए मोहिनी का अवतार भी लिया। इस प्रकार कूर्म अवतार एक साथ छह अवतारों का सम्मिलित रूप है। भागवत महापुराण, श्री विष्णु पुराण आदि पुराणों में इसका व्यापक वर्णन हमें मिलता है।

कृत्वा वपुः काच्छपमद्भुतं महत् प्रविश्य तोयं गिरिमुज्जहार।..

दधार पृष्ठेन स लक्षयोजन प्रस्तारिणा द्वीप इवापरो महान्...

तथा सुरानाविशदासुरेण रूपेण तेषां बलवीर्यमीरयन्।

उद्दीपयन् देवगणांश्च विष्णुः दैवेन नागेन्द्रमबोध रूपः।।

उपर्यगेन्द्रं गिरिराडिवान्यः आक्रम्य हस्तेन सहस्रबाहुः।...

उपर्यधश्चात्मनि गोत्रनेत्रयोः परेण ते प्राविशता समेधिताः।

भागवत महापुराण अष्टम स्कंध में बताया गया है कि कूर्म भगवान ने एक लाख योजन विस्तार होने वाले जम्बू द्वीप के समान अपने पीठ पर मंदर पर्वत को उठाया। इतना महान मंदर पर्वत जो श्रीवैकुंठ का एक महान आकर्षक है उसे अपने पीठ पर ढोना ही मुश्किल हो तो उसको मन्थनी के समान घुमाते रहने पर भी प्रभु जी को कुछ नहीं हुआ बल्कि ऐसे लगा कि कोई उनके पीठ पर खुजली कर रहा है। इतने शक्तिशाली हैं कूर्म भगवान। इस समय समुद्र मंथन के जिस महान कार्य का संकल्प देव दानवों ने किया उसे सफल बनाने के लिए भगवान श्री महाविष्णु दानवों की शक्ति और समर्थता बढ़ाने के लिए उनमें आसुरी शक्ति के रूप में प्रवेश किया। वैसे ही देवताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए देवी शक्ति के रूप में उनमें भी प्रवेश किया। जिस सर्पराज वासुकी को उन्होंने रस्सी बना दी उसे कोई कष्ट न लगे, इस उद्देश्य से उसमें निद्रा के रूप में प्रवेश किया। उसके बाद मंदर पर्वत के ऊपर एक दूसरे पर्वत के रूप में रहकर उसे ऐसा पकड़कर रखा ताकि वह महान पर्वत इधर-उधर न गिरे। देखिए, एक साथ कितने रूपों में विष्णु भगवान जी ने यह महान कार्य किया। इसीलिए कूर्म अवतार सबसे शक्तिमान अवतार माना जाता है। किसी भी बड़े बड़े भवन या इमारत का निर्माण करने पर उसके नीचे आज भी कूर्म यंत्र को ही रखते हैं ताकि उनका निर्माण

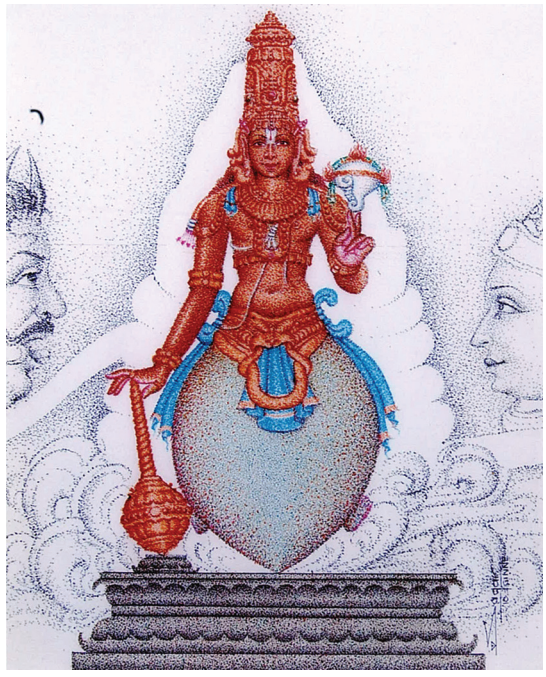

कभी ढीला न पड़े और सुदृढ़ बनकर कई सालों तक खड़ा रहे। ऐसी महानता और किसी अवतार में हमें नहीं दिखाई देता।

इसकी पुष्टि करते हुए श्री विष्णु पुराण के प्रथमांश के नव्वे अध्याय में बताया गया है -

क्षीरोदमध्ये भगवान् कूर्मरूपी स्वयं हरिः

मंदराद्रेरधिष्ठानं भ्रमतोभून्महामुने।

रूपेणान्येन देवानां मध्ये चक्रगदाधरः

चकर्ष नागराजानं दैत्यमध्ये परेण च।

उपर्याक्रांतवान शैलं बृहद्रूपेण केशवः

तथापरेण मैत्रेय यन्नदृष्टं सुरासुरैः।।

भागवत महापुराण और विष्णु पुराण में कूर्म भगवान के अवतार के बारे में संक्षिप्त वर्णन तो मिल रहा है लेकिन उनके संदेश या अन्य किसी महत्व के बारे में विशेष रूप से नहीं बताया गया है। यह कमी कूर्म पुराण के द्वारा पूरित हो जाता है। महापुराणों की सूची में कूर्म पुराण 15वा पुराण है। इस पुराण को सबसे पहले भगवान विष्णु ने राजा इन्द्रद्युम्न को सुनाया और उसके बाद कूर्म

अवतार का धारण करके समुद्र मंथन के समय इन्द्रादि देवताओं और नारदादि ऋषियों से कहा। तीसरी बार नैमिषारण्य में सूत महर्षि ने ऋषियों को यह कथा सुनायी। भगवान कूर्म के द्वारा कथित होने के कारण ही इस पुराण का नाम 'कूर्मपुराण' हुआ। कूर्म पुराण में कई अन्य कहानियों के साथ ईश्वर गीत, व्यास गीत आदि कई आध्यात्मिक विषय भी दिखाई देते हैं। हिंदू धर्म के तीन मुख्य संप्रदाय वैष्णव, शैव एवं शक्ति के अद्भुत समन्वय के साथ इस पुराण में त्रिदेवों की एकता, शक्ति और शक्तिमान में अभेद और विष्णु एवं शिव में परामैक्यता का सुंदर प्रतिपादन भी मिलता है। इस प्रकार कूर्म पुराण के माध्यम से कूर्म भगवान की महानता का परिचय मिलता है।

शतपथ ब्राह्मण कछुए-कूर्म को सभी प्राणियों के निर्माता के बराबर मानता है। भगवान प्रजापति सभी प्राणियों (प्रजा) को बनाने के लिए कूर्म का रूप धारण करते हैं। चूँकि उन्होंने सभी को बनाया, इसलिए प्रजापति के रूप को कूर्म कहा जाता था। कूर्म की तुलना कश्यप से की जाती है, इस प्रकार सभी प्राणियों को ''कश्यप की संतान'' कहा जाता है। कूर्म को सूर्य भी कहा जाता है।

कछुए को देवता यज्ञ-पुरुष के रूप में भी मानते हैं। छिपे हुए अदृश्य कछुए को वेदी और पवित्र अग्नि के साथ मिलाकर, देवता यज्ञ-पुरुष का प्रतीक माना जाता है, जो अग्नि वेदी से स्वर्ग तक और हर जगह तक फैले हुए एक अदृश्य आध्यात्मिक देवता हैं... यही कारण है कि कछुए की पहचान सूर्य से की जाती है।

लिंग पुराण, वराह पुराण और शिव पुराण में दशावतार सूची में कूर्म का उल्लेख दूसरे स्थान पर है। भागवत पुराण में कूर्म को भगवान विष्णु के 22 अवतारों की सूची में ग्यारहवाँ अवतार बताया गया हा। गरुड़ पुराण में उन्हें 20 अवतारों में से ग्यारहवाँ अवतार बताया गया है। ब्रह्माण्ड पुराण में राक्षस भंडासुर और देवी ललिता के युद्ध की कथा में, ललिता ने अपनी देवी सेना को आश्रय देने के लिए कूर्म का निर्माण किया, जो राक्षस द्वारा उपयोग किए गए हथियार से समुद्र में डूब रही थी। मार्कंडेय पुराण में कछुए के नौ भागों - मुंह, चार पैर, पूंछ, केंद्र और पेट के दो किनारों के अनुरूप क्षेत्र की विभिन्न भूमियों और नक्षत्रों और राशि चक्रों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

कुछ आलोचक यह भी अनुमान लगाते हैं कि समुद्र मंथन की किंवदंती मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने के लिए ध्यान के माध्यम से मन का मंथन करने का प्रतीक है। तैत्तिरीय आरण्यक में वातरसन : '(हवा से घिरे हुए)' मुनियों के उल्लेख के आधार पर - जिन्हें ऊर्ध्वमन्थिन भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'जो ऊपर की ओर मंथन करते हैं - और श्वेताश्वतर उपनिषद में दिए गए स्पष्टीकरण के आधार पर मानना यह है कि यह 'वह छिपी हुई धुरी प्रतीत होती है जिस पर अमृत मंथन के बारे में पौराणिक कथा की पहेली का सार घूमता है।'

आलोचक कहते हैं कि समुद्र मंथन की कथा खगोलीय घटनाओं का प्रतीक है, उदाहरण के लिए मंदरा पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है और मंथन रस्सी, वासुकी, पृथ्वी की धीमी वार्षिक गति का प्रतीक है... विष्णु या सूर्य स्वयं एक कुंडलित साँप पर आराम करते हैं... जो सूर्य के अपने अक्ष पर घूमने का प्रतिनिधित्व करता है। पृथ्वी को सहारा देने वाले कछुए के संबंध में कहते हैं कि 'बारह स्तंभ.. जाहिर तौर पर साल के बारह महीने हैं, और... चार हाथी जिन पर पृथ्वी टिकी हुई है वे दिकारिन

हैं, जो चार दिशाओं के प्रहरी हैं... कूर्म इस तथ्य का प्रतीक है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपनी वार्षिक कक्षा में अंतरिक्ष में समर्थित है।'

कूर्म को अन्य कई रूपों में भी दिखाते रहते हैं। कूर्मासन (कछुअ मुद्रा) एक योग मुद्रा है। पाणिकच्छपिका जिसका अर्थ है 'हाथ कछुआ' कूर्म का प्रतीक करने के लिए पूजा अनुष्ठानों के दौरान उंगलियों की एक विशेष स्थिति है। कूर्मचक्र एक यंत्र है, जो पूजा के लिए एक रहस्यमय आरेख है जो कछुए के आकार का है। इन सभी का उल्लेख उपनिषदों और पुराणों में किया गया है।

हिंदू विश्वास प्रणाली में, कछुआ अक्सर दृढ़ता और शक्ति दोनों का प्रतीक होता है। ब्रह्मांड के कई चित्रणों में एक हाथी द्वारा पृथ्वी को थामे रखने की छवि शामिल है, जो कछुए या कछुआ पर खड़ा है, जिसे अपने छोटे आकार के बावजूद अपार शक्ति प्रदर्शित करने वाला जानवर माना जाता है। एक कठोर, स्थिर खोल और अपना संतुलन खोने की संभावन न होने के कारण, कूर्म देवताओं को अमृत या दूध के सागर को निकालने में सफल होने में सक्षम है।

कूर्म अवतार का महत्व यह है कि यह लचीलेपन, निस्वार्थता और दृढ़ संकल्प के महत्व पर बहुमूल्य शिक्षा प्रदान करता है। कूर्म अवतार स्थिरता, चुनौतियों का सामना करने में दृढ़ता, निस्वार्थ सेवा, एकता और ब्रह्मांड की सुरक्षा और संरक्षण का महत्व सिखाता है।

स्थिरता और संतुलन का महत्व

कूर्म अवतार हमारे जीवन में स्थिरता और संतुलन के महत्व का प्रतीक है। जिस तरह कूर्म की स्थिर उपस्थिति ने पहाड़ को डूबने से बचाया, उसी तरह हमें चुनौतियों पर विजय पाने और सद्भाव बनाए रखने के लिए अपने भीतर संतुलन खोजना चाहिए।

एकता और सहयोग

ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन में देवों और असुरों दोनों का सहयोग शामिल था। कूर्म अवतार एकता और सहयोग के

महत्व पर जोर देता है, हमें याद दिलाता है कि जब हम एकजुट होते हैं, तो हम अपने मतभेदों के बावजूद उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

सुरक्षा और संरक्षण

कूर्म अवतार ब्रह्मांड की दिव्य सुरक्षा और संरक्षण का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमें अपने पर्यावरण और सभी जीवित प्राणियों की देखभाल और सुरक्षा करने की हमारी जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

कूर्म भगवान की पूजा कछुए के प्रतीक के साथ हर वसंत में कूर्म जयंती के त्यौहार के दौरान की जाती है, जहाँ वह समुद्रमंथन के दिन की सालगिरह के दिन अनुष्ठानों और त्योहारों से जुड़े स्वास्थ्य और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। यह हर साल मई या जून की पूर्णिमा से निर्धारित किया जाता है।

वराह पुराण में पौष मास के शुक्ल पक्ष में बारहवें चंद्र दिवस पर समाप्त होने वाले तीन चंद्र-दिवसीय उत्सव में उपवास और कूर्म-विष्णु की पूजा के साथ व्रत की सिफारिश की गई है। व्रत का पहला दिन वह दिन माना जाता है जब विष्णु ने समुद्र मंथन में कूर्म रूप धारण किया था।

भारत में विष्णु के इस अवतार को समर्पित कुछ विशेष मंदिर हैं- कुरमई (आंध्रप्रदेश का चित्तूर जिला), श्रीकूर्मम (आंध्रप्रदेश का श्रीकाकुलम जिला), गविरंगपुर (कर्नाटक का चित्रदुर्ग जिला), स्वरूपनारायण (पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में गोघाट गाँव)।

आंध्रप्रदेश के श्रीकूर्मम गाँव में, कछुए के रूप में विष्णु के इस विशेष अवतार को समर्पित एक मंदिर है। मंदिर में विष्णु के सभी अवतारों की अलकोव और मूर्तियाँ है, साथ ही समुद्रमंथन सहित विभिन्न पवित्र दृश्यों को दर्शाने वाले जटिल मोज़ेक और भित्तिचित्र भी हैं। कूर्म की रत्नजड़ित कछुआ मूर्ति दो फीट लंबी है, जो काल पत्थर से बनी है, लेकिन रंग में पीले से चंदन की लकड़ी की तरह दिखती है। मंदिर के आस-पास का पार्क 200 से अधिक जीवित कछुओं के लिए एक पवित्र वन्यजीव अभयारण्य भी है। मंदिर में दैनिक अनुष्ठान और बहु-दिवसीय उत्सव के साथ-साथ कछुओं के पसंदीदा भोजन गोंगुरा के पत्तों को चढ़ाने का प्रथा भी है।

महाभक्त श्री वेदांत देशिक महोदय अपने दशावतार स्तोत्र में कूर्म भगवान की प्रार्थना करते हुए कहते हैं-

अव्यासुः भुवनत्रयं अनिभृतं कण्डूयनैः अद्रिणा
निद्राणस्य परस्य कूर्मवपुषो निस्वास वातोर्मयः।
यत विक्षेपण संस्कृतोदधि पयः प्रेंखोल पर्यङ्किका
नित्यारोहण निर्वृतो विहरते देवः सहैव श्रिया।।

कूर्मावतार को नमस्कार करते हुए इस श्लोक में निहित मुख्य प्रार्थना है- ''कूर्मवपुषाः परस्य निस्वास वधः भुवन त्रयीं अव्यासुः'' (महासागर तल पर विशाल कछुए के रूप में विश्राम करने वाले परम पुरुष की सांस की लहरें तीनों लोकों के प्राणियों की रक्षा करें।)

भगवान विष्णु के कूर्म अवतार में गहन शिक्षाएँ हैं जो मानव अस्तित्व के सार के साथ प्रतिध्वनित होती हैं। स्थिरता, दृढ़ता के अपने प्रतीकवाद के माध्यम से जो महान संदेश हमें कूर्म अवतार से मिलता है वह अन्य और किसी अवतार में नहीं मिलता।

जय बोलो श्री कूर्मभगवान की जय!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

जम्मलमडुगु श्रीभूसहित श्री नारापुर वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

(दि. **11-05-2025** *से दि.* **19-05-2025** *तक)*

दिनांक	वार	दिन	रात
11-05-2025	रवि	ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
12-05-2025	सोम	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
13-05-2025	मंगल	मोतीवितानवाहन	सिंहवाहन
14-05-2025	बुध	कल्पवृक्षवाहन	हनुमन्तवाहन
15-05-2025	गुरु	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
16-05-2025	शुक्र	सर्वभूपालवाहन	कल्याणम्, गजवाहन
17-05-2025	शनि	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
18-05-2025	रवि	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
19-05-2025	सोम	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

तिरुमंगै आल्वार

तिरुमंगै आल्वार का जन्म चोल देश में स्थित तिरुक्कुरैयालूर में हुआ है। यह गाँव बंगाल की खाडी और कावेरी नदी के संगम प्रांत में हैं। आपने अनेक शीर्षकों में अनेक पाशुरों की रचना की है। ये नालायर दिव्य प्रबन्धम् के पेरिय - तिरुमोळि, तिरुक्कुरुन - दांडकम्, तिरुनेडुन्तांडकम्, सिरिय - तिरुमडल, पेरिय - तिरुमडल और तिरुवेलुक्कुत्तिरुक्कै में ऐसा कहा गया था।

आपके ''पेरिय - तिरुमोलि'' के भिन्न भिन्न दशकों के 53 पाशुरों में वेंगडम् और श्री वेंकटेश्वर की महत्ता गायी गयी है।

आठवें तिरुमोलि के प्रथम दशक के पाशुरों में वे अपने मन को वेंगडम् के प्रभु श्री वेंकटेश्वर की ओर मुडने के लिए प्रबोधित करते हैं। इनमें बालाजी को उन्होंने श्रीकृष्ण कहा है। साथ साथ क्षीरसागर में विलसनेवाले वटपत्रशायी कहते हुए भगवान को श्रीरंगम् के अधिनाथ भी मानते हैं। आगे कहते हैं कि ये ही भगवान कृतयुग में श्वेतवर्ण के, द्वापरयुग में पीले(हल्दी) रंग के और कलियुग में काले रंग के होते हैं। ऐसे भगवान के सामने वे प्रणमित होते हैं जिनके पदकमलों पर देवता समूह झुकता है। ये भगवान सुदर्शन चक्रधारी हैं जिससे हमेशा शरणागतों की रक्षा होती है।

आल्वार अपने पाशुरों में तिरुवेंगडम् के भगवान को त्रिविक्रम कहते हैं। गजेन्द्र रक्षक और गजेन्द्र मोक्षप्रदायक भी कहते हैं। हिमालय की पर्वत श्रेणियों के बदरिकाश्रमवासी को ही तिरुमालिरुमशोलै और तिरुविडवेंदै के वासी के रूप में वर्णित करते हैं। भगवान को वे अष्टभुजी और अष्टभुज क्षेत्रवासी कहते हैं। अष्टदिशों के रक्षक और सप्त लोकाधिपति मानते हुए कहते हैं कि प्रलय के समय वे उनकी रक्षा भी करते हैं। वे ही सुदर्शन चक्रधारी हैं और सालवृक्ष भंजक भी (रामावतार में सुग्रीव के संदर्भ में) हैं। पांडवों के सहायक भी वे ही हैं और भारत युद्ध में विजय संप्राप्त करानेवाले भी ये ही हैं। बलि चक्रवर्ती से पृथ्वी का दान स्वीकार करनेवाले श्रीपति वे ही हैं और हिरण्यकश्यप के हृदय को चीरनेवाले नृसिंह भी ये ही हैं। चन्द्रमा को रोग (क्षीण रोग) से मुक्त करनेवाले परंधाम ये ही हैं और पंचभूतों (विश्व के कारक पंचतत्त्वों) के अनुशासक भी ये ही हैं। सहस्रनामों से आराधित

परब्रह्म ये ही हैं, देवताओं के अधिदेव ये ही हैं और श्रीलक्ष्मीनाथ भी ये ही। पाशुरम 9 में ये अपने मन को तिरुवेंकटशैल नाथ के शरण में जाने के लिए उद्युत करते हैं। यह पहाड अन्य पहाडों के बीच तिलकम् के रूप में प्रकाशित है। इस पर्वत पर शोभित अष्टोत्तर नाम जप करने मात्र से भक्तों को दर्शन देते हैं- ''ओम नमो वेंकटेशाय''। इस मंत्र जप से भक्त मुक्त होते हैं और उन्हें पुनर्जन्म राहित्य मिलता है।

पाशुरम 10 में आल्वार भगवान को ''कलियान'' कहते हैं और मानते हैं कि तिरुमंगै प्रान्त के लोगों (भक्तों) के मुखिया हैं। अपने नौ पाशुरों को वे नौ पुष्प मालाएँ कहते हुए भगवान को अर्पित करते हैं। ये नौ पाशुरम तमिल में हैं। इनको गानेवाले भक्त श्री वेंकटेश्वर के प्रिय होते हैं और अंततोगत्वा उनके पास पहुँच जाते हैं।

उनकी चतुष्पदी रचनाओं से हमें विदित होता है कि वेंगडम् पर्वतश्रेणियाँ जलधाराओं, पुष्करिणियों, पुष्प वनों आदि से मण्डित हैं। ''कुरवा'' जाति की युवतियों के लोकनृत्यों से प्रकाशित हैं।

9वें तिरुमोलि के प्रथम दशक में आल्वार जी ने वेंगडम् के अधिनाथ से शरणागति की माँग की है। सुन्दर बाँसों की झुरमुटों, फूल वनों, शहद बरसानेवाली मधुमक्खियों और वृक्षशाखाओं, झरियों और सरिताओं, कमलों से युक्त सरोवरों, मस्त हाथियों से विलसित वेंगडम् की भूरि प्रशंसा करते हैं।

भगवान से निवेदन करते हैं कि वे कृपा भाव से क्लिष्ट और पापों से भरे जीवन से उन्हें संभालें। पार्थिव संबन्धों और अनुबन्धों से मातावत्, पितावत् रक्षा करें। वे पारिवारिक संबन्धों से त्रस्त और शिथिल हैं। उन्हें भगवान स्वीकार करें और उनकी रक्षा करें। मृगाक्षियों से वे आकर्षित होकर दु:खी हैं। कभी किसी प्रकार का पुण्य कार्य किया नहीं है। इन सबके बावजूद वे भगवान की शरण में आये हैं। वे दया दिखाकर कृपा भाव से उध्दार अवश्य करें। दूसरे पाशुरम में वे भगवान को हाथी कहते हैं।

10वें पाशुरम जो कलियन से सृजित हैं, मैं वे स्पष्ट घोषित करते हैं कि इन पाशुरों का गायन करनेवाले सप्तगिरियों के नाथ की कृपा के भागीदार बनेंगे। ये वेंगडम् के नाथ देवताओं, वेदों से स्तुत्य हैं।

10वें तिरुमोलि के प्रथम दशक में 5 वाँ पाशुर में भी तिरुवेंगडम् के अधिपति श्री वेंकटेश्वर की स्तुति के साथ उनसे प्रार्थना है कि वे कृपा कर आल्वार के कष्टों को दूर करें। रास्ते के अडचनों को दूर करें। दया बरसायें।

आगे के चार पाशुरों में परमपिता परमेश्वर से मानवीय जीवन के दु:खों से मुक्त करने की प्रार्थना निहित है। वे कहते हैं कि भगवान अपने मन और मस्तिष्क में हैं। उन्होंने भक्त आल्वार के जीवन के दु:खों को दूर किया है। उनको

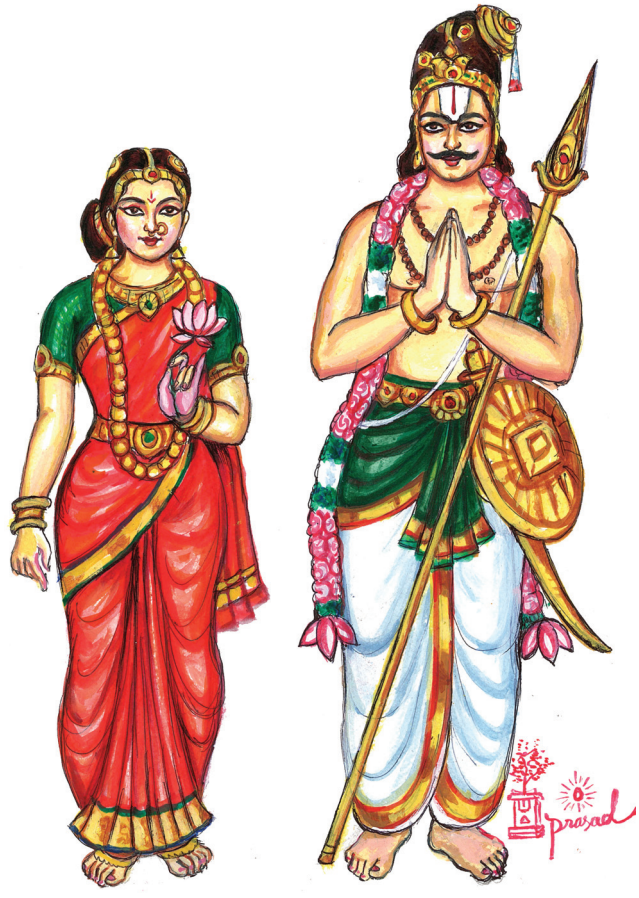

अपना भक्त बना लिया है। भगवान तो सामान्यों के लिए अप्राप्य और भक्तों तथा पवित्र जनों के लिए सुप्राप्य हैं। अनवरत प्रकाशवान हैं। वे भक्त चिंतामणि हैं। इच्छाओं के पूरक हैं। सबके अधिनाथ हैं। मन वासी हैं। उनके पास वे स्वयं आये है (आल्वार के पास)। उनकी मनौतियाँ सुनते हैं। ऐसे भगवान को वे छोडेंगे नहीं। उनके पदकमलों के अलावा अन्यों को चाहेंगे नहीं। इस दिशा में सोचेंगें तक नहीं।

10वीं चतुष्पदी में तिरुमंगैयाल्वार कहते हैं कि जो कलियन द्वारा रचित पाशुरों का गायन करेंगे, वे अवश्य देवता समूह में एक हो जायेंगे।

प्रथम पाशुरम में वेंकटेश्वर को श्रीराम कहते हैं। पाशुरम 2 में गरुडवाहन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। ये राक्षस संहारक प्रभु हैं। श्री वेंकटेश्वर तो प्रधानतः तुलसीमाला प्रिय हैं। पाशुरम 3 में समस्त सागरों को अपने मुँह में संभालनेवाले भगवान हैं। प्रलयकाल में उनका यह रूप अत्यंत प्रभावकारी है। प्रलय के समय में ये ही वटपत्रशायी होकर शयन करते हैं। ये अमृतमय हैं।

पाशुरम 4 में श्रीकृष्ण को माखनचोर के रूप में चित्रित कर संतुष्ट होते हैं। साथ साथ यहाँ भगवान के वामन रूप का प्रस्तुतीकरण भी हुआ है। पाशुरम 5 में भगवान का नरसिंह रूप उभरता है। स्तंभ से फूटकर ही भगवान विष्णु ने हिरण्यकश्यप का संहार किया था। ये ही शेषशायी (आदिशेष पर शयन करने वाले) हैं। पाशुरम 6 में भगवान को अपने जनक बताते हैं। पाशुरम 7 में नीलादेवी से विवाह करनेवाले विष्णु का स्मरण करते हैं। वे कहते हैं कि उस समय भगवान ने सात वृषभों (राक्षस बैल के रूप में) का संहार भी किया था। पाशुरम 8 में वे भगवान को ''आयन'' कहते हैं। वे ही गोपाल कृष्ण हैं।

प्रथम तिरुमोलि के द्वितीय दशक के नौ पाशुरों में अपने मन और मस्तिष्क की प्रशंसा करते हैं तथा आनंदित होते हैं क्योंकि उसी ने उनको भगवान की सेवा में प्रवृत्त होने की प्रार्थना की है। भगवान वेंगडम् के नाथ श्री वेंकटेश्वर की ओर उन्हें उन्मुख किया है।

ये भगवान भक्तों के मनों में निवास करते हैं। जो मानव अपने रक्त संबन्धों से हटकर उनकी सेवा में लगता है उसे तारकर जीवागमन चक्र से मुक्त करते हैं। ये भक्तों द्वारा प्रेम से स्वीकृत हैं और अपने भक्तों को उनके संबन्धियों के साथ मुक्ति प्रदान करवाले भगवान हैं। वे आगे कहते हैं कि जो मन कल तक भौतिक इच्छाओं और कामनाओं की ओर आकृष्ट था, वही अब भगवान के प्रति आकर्षित हो गया है। वह किसी का अनुकरण और अनुकृति करना नहीं चाहता। अपने ही मार्ग पर भगवान श्री वेंकटेश्वर (वेंगडम् वासी) की सेवा में लीन होना चाहते है।

अनेक भक्त लोग भगवान की प्राप्ति के लिए मस्त होकर नाचते गाते हैं। कुछ दानव भी इसी प्रकार तरसते हैं, पर उन्हें प्राप्त नहीं हुए। ब्रह्म, ईश्वर (महेश्वर, शिव) और इन्द्र भी इनके सामने खडे रहते हैं। ऐसे भगवान हैं श्री वेंकटेश्वर!

पाशुरम 10 में वे उद्घाटित करते हैं कि जो भक्त विनम्रता से इन पाशुरों का गान करेगा वह परमपद प्राप्त करेगा, क्योंकि ये पद वेंगडम् के नाथ की विशिष्टताओं का गायन करते हैं। ये अमरों (देवता) के अधिपति कलिकर्नी हैं, परमहंस हैं एवं मंगैयार नगर वासियों के भगवान हैं।

उक्त पाशुरों में आल्वार जी भगवान श्री वेंकटेश्वर को वामन, कृष्ण आदि अवतार स्वरूप बताते हैं और कहते हैं कि ये सूर्य मण्डल में रहते हैं। यहाँ वे कानवर (जंगल की एक जाति) को पर्वत निवासी भी कहते हैं। कुहरे से ग्रसे पहाडों को सुगन्धित धुएँ से आच्छादित करते हैं। सुरगायों (चमरी मृगों) से और भौंरों के नाद से भरे जंगल को महान बताते हैं। बासों की झुरमुटों से गिरते बीजों को मोती कहते हैं।

क्रमशः

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

भगवान की महिमा व दर्शन भक्तों के द्वारा प्रकट होते हैं। उच्च स्तर पर भगवान और भक्त में अभेदकत्व को स्वीकार किया गया है। हिंदू धर्म में भगवान के स्वरूप को तथा उसे प्राप्त करने के मार्ग को दिखानेवाले दिव्यौषद के रूप में वेदों को माना गया है। बल्कि भगवान को वेदस्वरूपा भी माना गया है। वेद और उन में निक्षिप्त ज्ञान सर्वसुलभ या जन सुलभ नहीं है। दया और करुणा की मूर्ति भगवान ने वेद और उन में निक्षिप्त ज्ञान को जन सुलभ बनाने के लिए अनेक मुनियों, ऋषियों एवं कवि-गायकों का सृजन किया है। वेदव्यास से लेकर कवि-गायक, पदकविता के पितामह, संकीर्तनाचार्य अन्नमय्या तक सारे महात्माओं ने वेद और उस में अंकित भगवान-दर्शन तथा मानव जीवन दर्शन को जन सुलभ बनाने की कोशिश की है। मानव जाति के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण और सायास प्राप्त भगवान का वरदान है। इन महात्माओं ने समय समय पर अपने प्रयासों से मानव जाति की अमूल्य सेवा की है। इस सेवा के लिए उन्होंने अपने जीवन को ही मानव जाति के हित के लिए समर्पित किया है।

साक्षात नारायण स्वरूप माने जानेवाले विखनस महर्षि के द्वारा प्रतिपादित वैष्णव भक्ति संप्रदाय और आगम शास्त्र को आज भी वैष्णव भक्ति पद्धति में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है। वैष्णव भक्ति संप्रदाय में भगवान और भक्त या श्रीहरि और भक्त के बीच में भक्ति की साधना के लिए नवधा भक्ति का आविष्कार किया गया है। नवधा भक्ति वैष्णव भक्ति संप्रदाय की आत्मा मानी जाती है। भगवान तक पहुँचने के लिए और कैवल्य की प्राप्ति के लिए सर्व सुलभ मार्ग भक्ति मार्ग को मानते हुए उस में ''श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं अर्चनं वंदनं दास्यं सख्य मात्मानिवेदनं।'' नौ प्रकार की भक्ति का आविष्कार किया गया है। इन नौ प्रकार की भक्ति में भी परस्पर संबंध है। जैसे कीर्तन-गान करते समय उस का श्रवण करना और उसे स्मरण में रखना हो जाता है। वैसे ही कीर्तन

के द्वारा वंदना, सेवा करना, अर्चना करना भगवान के साथ अपने संबंध को स्थापित करना यानी सख्य, दास्य आदि का उल्लेख हो जाता है। फिर कीर्तन के द्वारा ही आत्म निवेदन होता है। अतः इन नौ प्रकार की भक्ति के प्रकारों में कीर्तन अत्यंत महत्व का स्थान रखता है। इस कीर्तन-गान के माध्यम से ही अनेक कवि और गायकों ने कैवल्य को प्राप्त किया है।

मधुर कविगायक, संकीर्तनाचार्य, श्री वेंकटेश्वर भगवान के परम भक्त अन्नमय्या, मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा, कीर्तनकार त्यागराजु, रामदास, क्षेत्रय्या, पुरंदरदास आदि ने इस कीर्तन पद्धति को सहर्ष अपनाकर कैवल्य को प्राप्त किया है। बत्तीस हजार संकीर्तन रचनेवाले अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर के हृदय में सदा के लिए स्थान बना लिया है। उन का 'संकीर्तन भांडागार' तिरुमल के आनंदनिलय मंदिर के बाजु में ही आज भी उपलब्ध है। यह प्रमाण अन्नमय्या प्रस्तुत करता है कि कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर की भक्ति साधना में अन्नमय्या के संकीर्तनों का अनुपम एवं महत्वपूर्ण स्थान है। केवल तेलुगु भाषियों के लिए ही नहीं संपूर्ण भारतीय भाषा-भाषियों के लिए अन्नमय्या वरद पुत्र प्रमाणित हुए हैं। वेद और वेदांत सार को जनसुलभ बनाने के लिए उन्होंने हजारों संख्या में संकीर्तन रचे हैं। बल्कि इस रूप में कहना ही उचित लगता है कि श्री महाविष्णु के सहज रूप धारी श्री वेंकटेश्वर भगवान ने ही वेदांत-सार को और भक्ति-प्रपत्ति को जन सुलभ बनाने केलिए अन्नमय्या का सृजन किया है। यह भी माना जाता है कि नित्य शूरों की तरह श्री महाविष्णु के निज शरीर पर सदा शोभित होनेवाले नंदक खड्ग का अंश ही कलियुग में अन्नमय्या के रूप में पैदा हुआ है। अन्नमय्या की जीवनी से पता चलता है कि आखिरकार अन्नमय्या अपने भौतिक व निज रूप त्याग करके भगवान श्री वेंकटेश्वर में ही लीन हो गए।

हजारों संख्या में प्राप्त होनेवाले अन्नमय्या के संकीर्तनों में वेदांत सार निक्षिप्त है। उन में भक्ति, वेदांत, आध्यात्म, श्रृंगार आदि विषयों से संबंधित संकीर्तन सरल तेलुगु भाषा में गायन शैली में गाने योग्य वेद रूपी भगवान श्री महाविष्णु के कलियुग अवतार श्री वेंकटेश्वर के चरित को तथा माई अलमेलुमंगा की महत्ता को कीर्तन करनेवाले अन्नमय्या के ये संकीर्तन अमर हैं, अनुपम है, अमोघ-अद्वितीय और जन जन को सुनने और समझने की आवश्यकता है। वैष्णव भक्ति की रीढ ही नहीं बल्कि वैष्णव भक्ति संप्रदाय के संपूर्ण विश्व रूप अन्नमय्या के इन सरल संकीर्तनों के माध्यम में दर्शन किया जा सकता है। तेलुगु में लिपिबद्ध उन संकीर्तनों में अत्यधिक लोक प्रिय कुछ संकीर्तनों को हिंदी के प्रेमियों को तथा हिंदी प्रदेश के श्री वेंकटेश्वर के भक्तों के निकट पहुँचाने का लक्ष्य ही यह 'श्रीनिवास की संकीर्तन पुष्पांजली' शीर्षक का चरमोद्धेश्य है।

पहला कीर्तन

तिरुपति-तिरुमल की यात्रा करनेवाले तिरुपति के निकट हर किसी माध्यम से पहुँचते ही दर्शन देनेवाले प्रसिद्ध पर्वत-श्रृंखला वेंकटाचल या शेषाद्री पर्वत श्रृंखला है। आदिशेष के रूप में विराजमान इन पहाडों को अन्नमय्या ने पहली बार तिरुमल की यात्रा करते समय देखकर भाव विभोर होकर उन्हें सहज रूप से कलियुग वैकुंठ या हरिवास के रूप में घोषित किया है। उसी कीर्तन-पुष्प से ही यह कीर्तन-पुष्पांजली का शुभारंभ किया जा रहा है।

संकीर्तन का तेलुगु शीर्षक

''अदिओ अल्लदिओ श्रीहरिवासमु...''

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

देखो भाई! वही है हरि का निवास
दस सहस्र नागों के फणों का विलास।
जगत में उन्नत वेंकटाद्री है वही,
ब्रह्मादियों का विलक्षण विलास,
सकल मनिवृंदों का है यह नित्य निवास
देखो भाई! नमन करो, वही आनंदमय। ।देखो भाई!।

शेषाचल को देखो भाई, इतना समीप वही
गगन तल के देवगणों का निवास वही

आंगन में तो है ही, मूल धन सा वही
स्वर्णमय शिखरों से भाई बहु ब्रह्ममय। ।देखो भाई!।

कैवल्य पद प्रदाता-वेंकटाचल नग वही
श्री वेंकटेश की सिरि वही
सकल वैभव रूप मानो वही
पावन सब से पावनमय वही। ।देखो भाई!।

भावार्थ

अन्नमय्या ने तिरुपति पहुँचने के पहले ही दूर से शेषाचल पहाडी को देखा है। देखते ही कह उठे - यही कलियुग वैकुंठ श्रीहरि वास का स्थान है। यही सुंदर शेषाचल पर्वत श्रृंखला है। आज के तकनीकी उपकरणों के कारण यह स्पष्ट हो चुका है कि तिरुमल के वेंकटाचल पर्वत स्वयंभू श्रीनिवास का ही सालिग्राम रूप है। साथ ही तिरुमल से लेकर श्रीशैल श्रृंग तक पूरा आदिशेष के रूप में यह पर्वत श्रृंखला फैली हुई है। यह साक्षात आदिशेष का ही रूप है। श्री महाविष्णु के 'पर' रूप में आदिशेष पर नित्य शयन करनेवाले श्रीवैकुंठ के श्री महाविष्णु की तरह इन वेंकटाचल के पर्वतों में श्री वेंकटेश्वर ने अपना वास बना लिया है। उसे देखो भाई। पहचान करो कि यही कलियुग श्रीवैकुंठ है।

जैसे श्री महाविष्णु के 'पर' रूप में नित्य वे वैकुंठ में अनंत या आदिशेष पर शयन करते हैं वैसे ही श्री वेंकटेश्वर भगवान का आनंदनिलय मंदिर भी वेंकटाचल के पहाडों में बसा हुआ है। उसी को स्पष्ट करते और पहचानते हुए, अवलोकन करते हुए अन्नमय्या ने भक्तों को सावधान किया है... कलियुग वैकुंठ यही वेंकटाचल है। आदिशेष के सहस्रफणों पर यह हरिवास बसा हुआ है। जो वेंकटाचल या तिरुवेंगडम कहा जाता है। ये सारे सातों पहाड या सप्तगिरि आदिशेष के फणों से भरे हुए हैं। यह वेंकटाचल पर्वत अति उन्नत शिखरों से भरा पहाड है। इस पर वास करना और पाद रखना ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी अति दुर्लभ है। क्यों कि यही पर नित्य और सत्य होकर श्री महाविष्णु के रूप धारी श्री वेंकटेश्वर बसे हुए हैं। इस पर अनेक मुनिगण नित्य साधना करते हैं। उसे देखो और उसे नमन करो हे भाई! क्योंकि इन पर्वतों को नमन करने मात्र से शाश्वत आनंद प्राप्त होता है। क्यों कि इन पर्वतों पर आनंदनिलय के वासी श्री वेंकटेश्वर बसे हुए हैं।

यह देखो भाई! ये पर्वत दूर नहीं है अति समीप है। आकाश में विचरण करनेवाले देवताओं के लिए भी यह अपना निजी वास बना हुआ है। यह देखो भाई! यह अपने आंगन में ही है। इस में श्री वेंकटेश्वर ही मूल धन बनकर बसे हुए हैं। इसे देखो भाई! इसे पहचानो। सोने के शिखरों के साथ आनंदनिलय मंदिर में वे ही श्री वेंकटेश्वर बसे हुए हैं। ये बहु ब्रह्मों के समान भगवान है। इसे देखो भाई!

कैवल्य या मोक्ष देनेवाले इस वेंकटाद्री पर्वत को देखो भाई! ये ही पर्वत श्री वेंकटेश्वर के लिए बहु बृहद संपदा बने हुए हैं। क्यों कि यहाँ पर लक्ष्मी समेत श्री वेंकटेश्वर बसे हुए हैं। हे भाई! आप समझिए, पहचानिए, उस श्री वेंकटेश्वर को सारी संपदाओं की निधि के रूप में पहचानिए। यह वेंकटाचल जो हरि का निवास स्थान है, पावन से भी पावन है। इसे परखना और पहचानना हे भाई! आप को ही करना चाहिए।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

पुण्णिय नोन्बु पुरिन्दुमिलेन्, अडिपोट्रि शेय्युम्
नुण्णरुम् केळ्वि नुवन्रुमिलेन्, शेम्मैनूर्प्पुलवर्क्कु
एण्णरुम् कीर्ति रामानुज इन्रु नी पुहुन्दु एन्
कण्णुळ्ळुम् नेञ्जुळ्ळुम्, निन्ड्र इक्कारणम् कट्टुरैये ॥९२॥

महाकविभिरपि वर्णयितुमशक्यैरभिरामगुणैरलंकृत भगवन् रामानुज! पावनं व्रतं न किमपि मयाऽनुष्ठितम्; भवदीयपादरविन्दस्तवनौपयिकार्थ-श्रवणवार्ताऽपि नास्ति मम। एवं स्थितेऽपि तत्र भवानद्य मम चक्षुषि चित्ते च स्थिरप्रतिष्ठो वर्तते। किमत्र कारणमिति जिज्ञासमानाय मह्यं कथय तावत्॥

हे सकलशास्त्रवेत्ता कवियों के भी नापने की अशक्य दिव्य कीर्तिवाले श्री रामानुज स्वामिन्! मैंने किसी पवित्र व्रत का अनुष्ठान नहीं किया; और आपके पादारविंदों की स्तुति करने में अपेक्षित सूक्ष्म व श्रेष्ठ अर्थ सुने भी नहीं। तो भी आप मेरे नेत्र व हृदय में प्रवेश कर जो विराजमान हैं, इसका कारण बता दीजिए। (विवरण-और क्या? आपकी निर्हेतुक कृपा ही इसका कारण हैं।)

''श्री रामानुज स्वामीजी ने वेदों के अपार्थ करनेवाले कुदृष्टियों के दुर्वाद दूर किये।

क्रमशः

श्री हनुमान (आंजनेय) का पूजा विधान

भक्तवत्सल भगवान श्रीराम के दास श्री हनुमानजी का पूजाविधान हनुमज्जयंती के अवसर पर सप्तगिरि पाठकों के लिए...

प्रातःकाल नींद से जाग कर, स्नानादि नित्य कृत्य आचरण कर, शुद्ध होने के बाद, तुलसी पत्र, पुष्प, फल पूजादि द्रव्यों को व्यवस्था करके - श्री हनुमान (आंजनेय) का चित्रपठ या प्रतिमा को यथारूप पूजादिक करना चाहिए।

श्री केशवादि नामों से आचमन करने के बाद, प्राणायाम करके-संकल्प को बताना चाहिए।

घंटा नाद करने के बाद प्राणायाम कर, ''शुभतिथौ... गोत्रस्य... नामदेयस्य... धर्मपत्नी समेतस्य सहकुटुंबस्य सपुत्रकस्य सपौत्रकस्य सभ्रातृकस्य सबांधवस्य सपरिवारस्य क्षेम, स्थैर्य, धैर्य, विजय, अभय, आयुरारोग्य, ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ, काममोक्ष चतुर्विधफल पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थ्यं श्री हनुमान(आंजनेय) भगवान देवता मुद्दिश्य श्री हनुमान देवता प्रीत्यर्थे षोडशोपचार पूजां करिष्ये'' ऐसा संकल्प करने के बाद कलशाराधन करके - कलश पर हाथ रख कर-

कलशपूजा

तदंग कलशाराधनं करिष्ये, कलशं गंध पुष्पाक्षतै रभ्यर्च्यः
कलशस्यमुखे विष्णुः, कंठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौतु सागरा स्सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद स्सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिता स्सर्वे कलशांबुसमाश्रिताः
गंगेच यमुनेचैव गोदावरि! सरस्वति! नर्मदे सिन्दुकावेर्यौ जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।
कावेरी तुंगभद्रा चा कृष्णवेणी च गौतमी।।
भागीरथीति विख्याताः पंचगंगाः प्रकीर्तिताः।।
आयांतु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।

(कलश के जल के छीटों को पुष्प या तुलसी पत्र के माध्यम से भगवान पर, अपने शिर पर, पूजाद्रव्यों पर छिड़कना चाहिए।)

आदौ संकल्पित पूजा निर्विघ्नेन परि समाप्त्यर्थं श्री महागणपति पूजां करिष्ये (गणपति को पूजा करने के बाद) पूर्व संकल्पित श्री हनुमंत पूजां करिष्ये जैसा कहकर पूजा को प्रारंभ करना चाहिए। संकल्पः... पूर्वोक्त... शुभतिथौ श्री हनुमंतदेवता प्रीत्यर्थं षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

ध्यान

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशन।
शत्रून् संहार मां रक्षा श्रियं दापय मे प्रभो
स्फटिकाभं स्वर्णकांतिं द्विभुजं च कृतांजलिं
कुंडलव्दय संशोभि मुखांभोजं मुहुर्मुहुः।।
श्री हनुमते नमः, ध्यायामि।

आवाहन

रामचंद्र पदांभोज युगलस्थिरमानसं
आवाहयामि वरदं हनूमंत मभीष्टदं
श्री हनुमते नमः, आवाहयामि।

सिंहासन (आसन)

नवरत्न निबद्धाश्रं चतुरश्रं सुशोभनं
सौवर्णमासनं तुभ्यं दास्यामि कपिनायक
श्री हनुमते नमः, सुवर्णरत्न सिंहासनं समर्पयामि।

पाद्यम्

सुवर्ण कलशानीतं गंगादि सलिलैर्युतं।
पादयोः पाद्यमनघं प्रतिगृह्य प्रसीद मे
श्री हनुमते नमः, पादयोः पाद्यम् समर्पयामि।

अर्घ्यम्

कुसुमाक्षत सम्मिश्रं प्रसन्नांबु परिप्लुतं
अनर्घ्य मर्घ्य मधुना गृह्यतां कपिपुंगव
श्री हनुमते नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

मध्वाज्यक्षीर मिलितं शर्करा दधिसंयुतं।
अर्पये मधुपर्कं ते स्वीकुरु त्वं दयामय
श्री हनुमते नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पंचामृतस्नान

मध्वाज्य क्षीरदधिभिः सगुडैर्मंत्र पालितैः।
पंचामृतैः पृथग्जातै स्सिंचामि त्वां कपीश्वर
श्री हनुमते नमः, पंचामृतस्नानं समर्पयामि।
श्री हनुमते नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रं

ग्रथितां नवरत्नैश्च मेखलां त्रिगुणीकृतं
अर्पयामि कपीश त्वं गृहाण महतां वर।
श्री हनुमते नमः, वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।
वस्त्रधारणानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, एक बडा कपडा बांधना चाहिए और दोनों कंधों के ऊपर से नीचे लटकाकर जो वस्त्र को पहनना चाहिए।)

यज्ञोपवीतम्

श्रौत स्मार्त्तादि कृत्यानां सांगोपांग फलप्रदं
यज्ञोपवीत मनघं धारया निलनंदन
श्री हनुमते नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
अनंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

गन्धम्, सिंदूर

दिव्यसिंदूर कर्पूर मृगनाभि समन्वितं
सकुंकुमं पीतगंधं ललाटे धारयानघ
श्री हनुमते नमः, गंधसिंदूराणि समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, प्रतिमा के मुख के मस्तक पर और चरणों में सुगंधित गंधद्रव्य और सिंदूर को लगाएँ। गंधं को पहले ही तैयार करके रखना चाहिए।)

पुष्पाक्षताः

नीलोत्पलैः कोकनदैः कल्हार कमलैपरि
कुमुदैः पुंडरीकैस्त्वां पूजयामि कपीश्वर
श्री हनुमते नमः, परिमल पुष्पाक्षतान् समर्पयामि।
(ऐसा कहकर, प्रतिमा को फूलों से सुसज्जित करना है।)

अंगपूजा

श्री हनुमते नमः पादौ पूजयामि
श्री सुग्रीव सखाय नमः गुल्फौ पूजयामि
श्री अंगदमित्राय नमः जंघे पूजयामि
श्री रामदासाय नमः ऊरून् पूजयामि
श्री अक्षघ्नाय नमः कटिं पूजयामि
श्री लंकादहनाय नमः वालं पूजयामि
श्री राममणिदाय नमः नाभिं पूजयामि
श्री सागरोल्लंघनाय नमः मध्यं पूजयामि
श्री लंकामर्दनाय नमः केशावलीं पूजयामि
श्री संजीवाहर्त्रे नमः स्तनौ पूजयामि
श्री सौमित्रिप्राणदाय नमः वक्षः पूजयामि
श्री कुंठित दशकंठाय नमः कंठं पूजयामि
श्री रामाभिषेककारिणे नमः हस्तौ पूजयामि
श्री मंत्ररचित रामायणाय नमः वक्त्रं पूजयामि
श्री प्रसन्नवदनाय नमः वदनं पूजयामि
श्री पिंगनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि
श्री श्रुतिपारगाय नमः कर्णौ पूजयामि
श्री ऊर्ध्वपुंड्रधारिणे नमः कपोले पूजयामि
श्री मणिकंठमालिने नमः शिरः पूजयामि
श्री सर्वाभीष्टप्रदाय नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि

(घंटा बजा कर धूपं को लगाना चाहिए)

सूचना :- अष्टोत्तर शरनाम के बाद यह धूपं और दीपं स्तोत्र पूजा विधान को पढना चाहिए।

धूपं

दिव्यं सगुग्गुलुं रम्यं दशांगेन समन्वितं
गृहाण मारुते धूपं सुप्रियं घ्राणतर्पणं
श्री हनुमते नमः, दिव्य परिमल धूपमाघ्रापयामि।

(ऐसा कहकर, मूर्ति पर धूपं इस प्रकार देनी चाहिए कि धूपं की सुगंध अच्छी तरह फैली होनी चाहिए।)

(तीन बत्तियों को एक कर लें, दिया में घी डालकर दिया को जलाएँ और दीपक को चारों ओर घुमाएँ ताकि सभी को भगवान की मूर्ति के दर्शन हो जाएँ।)

दीपं

घृतवर्ति समुज्ज्वाला शतसूर्य समप्रभं
अतुलं तव दास्यामि व्रतपूर्त्यै सुदीपकं
श्री हनुमते नमः, दीपं दर्शयामि।

(ऐसा कहकर, भगवान को दिया दिखाने के बाद) धूपं, दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, उद्धरणी पात्र के पानी को भगवान को दिखाकर, अर्घ्य पात्र में डालना है।)

श्रीमद् हनुमंत अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ श्री आंजनेयाय नमः
ॐ महावीराय नमः
ॐ हनूमते नमः
ॐ मारुतात्मजाय नमः
ॐ तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः
ॐ सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः
ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः
ॐ सर्वमायाविभंजनाय नमः
ॐ सर्वबंधविमोक्त्रे नमः
ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः 10
ॐ परविद्यापरीहाराय नमः
ॐ परशौर्यविनाशकाय नमः
ॐ परयंत्रनिराकर्त्रे नमः
ॐ परमंत्रप्रभेदकाय नमः
ॐ सर्वग्रहविनाशाय नमः
ॐ भीमसेन सहायकृते नमः
ॐ सर्वदुःखहराय नमः
ॐ सर्वलोकचारिणे नमः
ॐ मनोजवाय नमः
ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः 20
ॐ सर्वमंत्रस्वरूपाय नमः
ॐ सर्वतंत्रस्वरूपाय नमः
ॐ कपीश्वराय नमः
ॐ महाकायाय नमः
ॐ सर्वरोगहराय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ बलसिद्धिकराय नमः
ॐ सर्वविद्यासंपत्प्रदाय नमः
ॐ कपिसेनानायकाय नमः
ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः 30
ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः
ॐ रत्नकुंडलदीप्तिमते नमः
ॐ संचलद्बालसन्नद्धलंभमान शिखोज्ज्वलाय नमः
ॐ गंधर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः
ॐ महाबलपराक्रमाय नमः
ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः
ॐ शृंखलाबंधमोचकाय नमः
ॐ सागरोत्तारकाय नमः
ॐ प्राज्ञाय नमः
ॐ रामदूताय नमः 40
ॐ प्रतापवते नमः
ॐ वानराय नमः
ॐ केसरीसुताय नमः
ॐ सीताशोकनिवारकाय नमः
ॐ अंजनागर्भसंभूताय नमः
ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः
ॐ विभीषणप्रियकराय नमः
ॐ दशग्रीवकुलांतकाय नमः
ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः
ॐ वज्रकायाय नमः 50
ॐ महाद्युतये नमः
ॐ चिरंजीविने नमः
ॐ रामभक्ताय नमः
ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः
ॐ अक्षहंत्रे नमः
ॐ कांचनाभाय नमः
ॐ पंचवक्त्राय नमः
ॐ महातपसे नमः
ॐ लंकिणीभंजनाय नमः
ॐ श्रीमते नमः 60
ॐ सिंहिकाप्राणभंजकाय नमः
ॐ गंधमादनशैलस्थाय नमः
ॐ लंकापुरविदाहकाय नमः
ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः
ॐ धीराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ दैत्यकुलांतकाय नमः
ॐ सुरार्चिताय नमः
ॐ महातेजसे नमः
ॐ रामचूडामणिप्रदात्रे नमः 70
ॐ कामरूपाय नमः
ॐ पिंगलाक्षाय नमः
ॐ वार्दिमैनाकपूजिताय नमः
ॐ कबलीकृतमार्तांडमंडलाय नमः
ॐ विजितेंद्रियाय नमः
ॐ रामसुग्रीवसंधात्रे नमः
ॐ महारावणमर्दनाय नमः
ॐ स्फटिकाभाय नमः
ॐ वागधीशाय नमः
ॐ नवव्याकृतिपंडिताय नमः 80
ॐ चतुर्बाहवे नमः
ॐ दीनबंधवे नमः
ॐ महात्मने नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ संजीवननगाहर्ते नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ वग्मिने नमः
ॐ दृढ़व्रताय नमः
ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः
ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः 90
ॐ दांताय नमः
ॐ शांताय नमः
ॐ प्रसन्नात्मने नमः
ॐ शतकंठमदापहृते नमः
ॐ योगिने नमः
ॐ रामकथालोलाय नमः
ॐ सीताऽन्वेषणपंडिताय नमः
ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः
ॐ वज्रनखाय नमः
ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः 100
ॐ इंद्रजित्प्रहितामेघ ब्रह्मास्त्र विनिवारकाय नमः
ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः
ॐ शरपंजरभेदकाय नमः
ॐ दीर्घबाहवे नमः
ॐ लोकपूज्याय नमः
ॐ जांबवत्प्रीतिवर्दनाय नमः
ॐ सीतासमेतश्रीराम पादसेवा नमः
ॐ धुरंधराय नमः 108

श्रीमद् हनुमंत स्वामिने नमः अष्टोत्तरशतनाम पूजां समर्पयामि।

सूचना : उपचार के साथ दिए जाने वाले इस दिया को आरती की जैसा आखों को छुआने की जरूरत नहीं होती है।

नैवेद्यम्

मणिपात्रसहस्राढ्यं दिव्यान्नं घृतपायसं
अपूप लड्डुकोपेतं मधुराम्र फलैर्युतं
हिंगूजीरक संयुक्तं षड्रसोपेत मुत्तमं
नैवेद्यमर्पयाम्यद्य गृहाणेदं कपीश्वर
यथाविधि निवेदनं कुर्यात्, मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि,
उत्तरापोशनं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि,
मुख प्रक्षालनं समर्पयामि, पादप्रक्षालनं समर्पयामि,
गंडूषं समर्पयामि, शुद्धाचमनीयं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर पाँच बार उद्धरणी के पानी को अर्ध्य पात्र में छोडना चाहिए।)

(तांबूलं में तीन सुपारी, दो पान के पत्ते होना चाहिए या दो सुपारि, तीन पान के पत्ते होना तांबूलं देने का तरीका है।)

ताम्बूलम्

नागवल्ली दलोपेतं क्रमुकैर्मधुरैर्युतम्
तांबूल मर्पयाम्यद्य कर्पूरादिसुवासितं

श्री हनुमते नमः, प्रदक्षिण (परिक्रमा) तांबूलं समर्पयामि, तांबूल चर्वणानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, भगवानजी को तांबूलं समर्पित करना चाहिए।)

(घंटा नाद करना चाहिए।)

कर्पूर नीराजनम्

आरार्तिकं तमोहारि शतसूर्य समप्रभं
अर्पयामि तवप्रीत्यै अंधकार निषूदनं
श्री हनुमते नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, भगवानजी को तीन बार सिर से लेकर चरणों तक कर्पूर कांति में मूर्ति दिखाने की तरह बायी ओर आरती देना है। आरती देते समय जो आरती पात्र को भक्ति प्रपत्ति से घुमाकर देना चाहिए तेज से नहीं करना चाहिए।)

नीराजनानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

मंत्रपुष्पम्

आंजनेयाय विद्महे।
वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत्प्रचोदयात्।।
श्री हनुमते नमः, सुवर्ण दिव्य मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, हाथबरा फूल लेकर हनुमानजी को स्मरण करके, भगवान के चरणों पर समर्पित करना है। हृदय की जैसा पुष्प को समर्पित कर रहे है की भावना होनी चाहिए। पूजा में भाग लेने वाले सभी को फूलों को दे कर, न कुचल करके भक्ति से फिर से टोकरी में डालना चाहिए। तदनंतर उन पर कलश के जल को फूलों से प्रोक्षण करने के बाद सभी के द्वारा दी गयी फूलों को भगवानजी के चरणों पर अर्पित करना है। बाद में भक्ति से नमस्कार करना है।)

प्रदक्षिण नमस्कार (परिक्रमा)

प्रदक्षिण नमस्कारान् साष्टांगान् पंचसंख्या
दास्यामि कपिनाथाय गृहाण सुप्रसीद मे
श्री हनुमते नमः आत्मप्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।

(बायी से दायी ओर नमस्कार मुद्रा में पाँच बार परिक्रमा करना चाहिए।)

छत्रं धारयामि, चामरैर्वीजयामि, नृत्यं दर्शयामि,
गीतं श्रावयामि, दर्णणं दर्शयामि, उष्ट्रानावाहयामि,
वाद्यम् घोषयामि, समस्त राजोपचार, भक्त्योपचार,
शक्त्युपचार पूजां समर्पयामि।

(ऐसा कहकर, पुष्प, अक्षत को स्वामीजी के चरणों पर रख कर नमस्कार करना चाहिए।)

अनया... पूजया श्री हनुमद्देवता सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु। सर्वेजनाः स्सुखिनो भवंतु-

पुष्पांजलिः

वैशाखे मासि कृष्णायां दशम्यां मंदवासरे
पूर्वाभाद्र प्रसुताय मंगलं श्री हनूमते
करुणारसपूर्णाय फलापूप प्रियाय च
माणिक्यहारभूषाय मंगलं श्री हनूमते
सुवर्चला कलत्राय चतुर्भुज धराय च
उष्ट्ररूढ़ाय वीराय मंगलं श्री हनूमते
दिव्यमंगलदेहाय पीतांबरधराय च
तप्तकांचनवर्णाय मंगलं श्री हनूमते
भक्तरक्षणशीलाय जानकीशोकहारिणे
जलत्पावकनेत्राय मंगलं श्री हनूमते
पंपातीर विहाराय सौमित्रि प्राणदायिने
सृष्टेः कारणभूताय मंगलं श्री हनूमते
रंभावन विहाराय गंधमादनवासिने
सर्वलोकैकनाथाय मंगलं श्री हनूमते
पंचाननाय भीमाय कालिनेमिहराय च
कौंडिन्यगोत्रजाताय मंगलं श्री हनूमते।
श्री हनुमते नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।

श्री हनुमान जयंती

-श्री ज्योतिन्द्र के. अजवालिया

हनुमान जयन्ती एक हिन्दू पर्व है। यह चैत्र माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन हनुमानजी का जन्म हुआ था। हनुमान जी को कलियुग में सबसे प्रभावशाली देवताओं में से एक माना जाता है।

हनुमान जयंती का इतिहास

धार्मिक कथा के अनुसार हनुमान जी भगवान शिव का 11वां रुद्र अवतार है। विष्णु जी के राम अवतार के बाद रावण को दिव्य शक्ति प्रदान हो गई। जिससे रावण ने अपनी मोक्ष प्राप्ति हेतु शिवजी से वरदान माँगा की उन्हें मोक्ष प्रदान करने हेतु कोई उपाय बताए। तब शिवजी ने राम के हाथों मोक्ष प्रदान करने के लिए लीला रचि। शिवजी की लीला के अनुसार उन्होंने हनुमान के रूप में जन्म लिया ताकि रावण को मोक्ष दिलवा सके। इस कार्य में रामजी का साथ देने हेतु स्वयं शिवजी के अवतार हनुमान जी आये थे, जो की सदा के लिए अमर हो गए। रावण के वरदान के अनुसार उन्हें मृत्यु के साथ-साथ उसे मोक्ष भी दिलवाया।

दूसरी ओर राजा केसरी अपनी पत्नी अंजना के साथ तपस्या कर रहे थे। इसलिए हनुमान जी ने माता अंजना से जन्म लिया।

हनुमान जयंती उत्सव

हनुमान जयन्ती को लोग हनुमान मंदिर में दर्शन हेतु जाते है। कुछ लोग व्रत भी धारण कर बड़ी उत्सुकता और ऊर्जा के साथ समर्पित होकर इनकी पूजा करते है। ये बाल ब्रह्मचारी थे अतः इन्हें जनेऊ भी पहनाई जाती है। हनुमानजी की मूर्तियों पर सिन्दूर चढ़ाने की परम्परा है। कहा जाता है राम की लम्बी आयु के लिए एक बार हनुमान जी अपने पूरे शरीर पर सिन्दूर चढ़ा लिया था और इसी कारण उन्हें और उनके भक्तों को सिन्दूर चढ़ाना बहुत अच्छा लगता है जिसे चोला कहते है। संध्या के समय दक्षिण मुखी हनुमान मूर्ति के सामने शुद्ध होकर मंत्र जाप करने को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है।

हनुमान जयंती के अवसर पर रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड पाठ का पठन भी हनुमानजी को प्रसन्न करता है। सभी मंदिरों में इस दिन तुलसीदास कृत रामचरितमानस एवं हनुमान चालीसा का पाठ होता है। स्थान-स्थान पर भण्डारे आयोजित किये जाते है। तमिलनाडु व केरल में हनुमान जयन्ती मार्गशीर्ष माह की अमावास्या को तथा उड़ीसा में वैशाख महीने के पहले दिन मनाया जाता है। वहीं कर्नाटक व आन्ध्रप्रदेश में चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख महीने के 10वें दिन तक यह त्योहार मनाया जाता है।

हनुमान जी का और कुछ प्रमुख नाम

हनुमान, अंजनीसुत, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ट, फाल्गुनसखा, पिंगाक्ष, अमितविक्रम, उदधिक्रमण, सीताशोकविनाशन, बजरंग बली, शंकर सुवन, महावीर, संकटमोचन, पवनकुमार। हनुमान जी के बचपन का नाम मारुति था। यह नाम उन्हें उनके पिता, पवनदेव के नाम पर दिया गया था। मारुति का अर्थ है ''पवन का पुत्र''। हनुमानजी का ये सभी नाम कष्टों से मुक्ति दिलाती है।

हनुमान जी के कुछ और नाम और उनके अर्थ

अंजनीसुत - माता अंजनी के पुत्र, वायुपुत्र - पवनदेव के पुत्र, महाबल - एक हाथ से पहाड़ उठाने और एक छलांग में समुद्र पार करने वाले महाबली, रामेष्ट - राम जी के प्रिय, फाल्गुनसखा - अर्जुन के मित्र, पिंगाक्ष - भूरे नेत्र वाले, उदधिक्रमण - समुद्र को लांघने वाले, सीताशोकविनाशन - सीताजी के शोक को नाश करने वाले, लक्ष्मणप्राणदाता - लक्ष्मण को संजीवनी बूटी द्वारा जीवित करने वाला।

मारुति नंदन का नाम हनुमान कैसा पड़ा -

एक बार हनुमान जी को बहुत भूख लगी और उन्होंने अपनी माँ अंजनी से खाने के लिए माँगा। अंजनी ने अपने पुत्र से कहा कि बाहर जाओ और फल खा लो। हनुमान जी बाहर गए और फल खाने लगे। तभी उन्हें आसमान में चमकता हुआ सूरज दिखाई दिया। हनुमान जी को लगा कि यह भी एक फल है। उन्होंने अपनी शक्ति से लंबी छलांग लगाकर सूर्य के पास पहुँच गए और उसे अपने मुँह में रख लिया। इस हरकत से धरती पर अंधेरा छा गया। तब सभी देवता इंद्र के पास गए और कहने लगे कि एक वानर ने सूर्यदेव को अपने मुँह में रख लिया है। इंद्र देव ने अपने वज्र से हनुमान जी की ठोडी पर प्रहार किया। इस प्रहार से हनुमान जी का हनु टूट गया। तबसे मारुति का नाम हनुमान पडा। और हनुमानजी को जीवनदान मिला यह घटना चैत्र मास की पूर्णिमा को हुई थी, इसलिए इस दिन हनुमान जयंती मनाई जाती है।

कार्तिक मास की चतुर्दशी को मनाई जाने वाली हनुमान जयंती के पीछे की कथा

इस दिन माता सीता ने हनुमान जी को अमरता का वरदान दिया था। इसलिए इस दिन भी हनुमान जयंती मनाई जाती है।

हनुमानजी की उपासना

कहा जाता है कि मनुष्य के जीवन में जब कष्ट का समय आता है तब मनुष्य बहुत कष्ट भोगते है तब कष्ट से छुटकारा पाने के लिए हनुमान उपासना बहुत ही फलदायी होती है। इस समय में हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का नित्य पठन बहुत ही लाभदायक बनता है। हनुमान चालीसा का पाठ बहुत ही उत्तम उपाय है। चमेली तेल का दिया जलाकर हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ करना चाहिए। तब हमे कष्टों से राहत मिलती है।

जय महावीर हनुमानजी की।

श्री प्रपन्नामृतम्

(55वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री आन्ध्रपूर्णाचार्य स्वामी की अनन्य आचार्यनिष्ठा

विद्वान श्री आन्ध्रपूर्णाचार्य अपने गुरुदेव यतिराज श्री रामानुजाचार्य के श्रीचरणों को ही उपायोपेय समझकर अहर्निश उनकी परिचर्या में रहकर ही अपना जीवन सफल बनाने लगे। इष्ट देवता की भाँति यतिराज की चरण पादुकाओं को ही परम आराध्य मानकर स्व-रचित अष्टोत्तरशत नामों से उनकी प्रेमपूर्वक पूजा और अर्चा आदि करते हुये उन्होंने इस कैंकर्य को ही मुक्ति का परम साधन माना। उनकी इस अनन्य आचार्यनिष्ठा को देखकर आचार्य सन्तुष्ट हो गये।

श्री आन्ध्रपूर्णाचार्य स्वामी अपने आचार्य यतिराज के साथ जब श्रीरंगनाथ भगवान के दर्शन के लिये जाते थे, तब वे भगवान के दर्शन न करके आचार्यनिष्ठा के कारण श्री यतिराज की ओर ही दर्शनार्थी बनकर देखते रहते थे। एक समय यतिराज ने श्रीरंगनाथ भगवान के नेत्रों की शोभा का वर्णन करते हुये उनसे कहा कि- ''देखो भगवान के नेत्रों का सौन्दर्य कैसा अवर्णनीय एवं दर्शनीय है।'' यह सुनकर आपने उत्तर दिया कि- ''दास के लिये आपके नेत्र ही परम प्रिय हैं?''

एक समय यतिराज ने भोजन करने के बाद अपना अवशिष्ट प्रसाद आदर सहित श्री आन्ध्रपूर्ण स्वामी को प्रदान किया। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त प्रसाद को स्वीकार करके आपने वह पालिया और बिना ही हाथ धोये इस अभिप्राय से कि यदि हाथ धायेंगे तो गुरुदेव के पवित्र प्रसाद का सूक्ष्मांश जल के साथ वह जायेगा, हाथ अपने मस्तक में पौंछ लिये। यह देखकर यतिराज कुपित हो गये और आदेश दिया कि- ''जाओ शीघ्र हाथ धोकर और शुद्ध होकर आओ।'' गुरुदेव के आदेश से आप हाथ धोकर आ गये। इसके बाद एक समय आप यतिराज के साथ श्रीरंगनाथ भगवान की गोष्ठी में गये थे। वहाँ पर यतिराज ने अपने प्रसाद में से प्रेमपूर्वक आधा गोष्ठीप्रसाद आपको दे दिया और आपने वह प्रसाद ग्रहण करके हाथ धो लिये। भगवत् प्रसाद के प्रति आपकी यह अशिष्टता देखकर यतिराज ने कहा कि- ''हे बुद्धिमान आन्ध्रपूर्ण! तुमने आज यह अविवेकपूर्ण आचरण क्यों किया। भगवत् प्रसाद लेने के बाद उच्छिष्ट मानकर हाथों को धोना भगवान का अपचार माना गया है। यह सुनते ही आपने यतिराज को उस दिन की घटना का स्मरण कराया, जब उन्होंने अपना प्रसाद लेने के बाद मठ में उन्हें हाथ धोने के लिये कहा था। आपने बताया कि जब भगवत् प्रसाद पाने के बाद हाथ जूठा नहीं होता है तो फिर आचार्य प्रसाद पाने के बाद हांथ कैसे उच्छिष्ट हो जाता है? यह सुनकर और अपने आचार्य के प्रति अनन्य भक्ति देखकर यतिराज ने कहा कि तुम्हारे जैसे श्रद्धालु गुरुभक्त के लिये सभी कार्य उचित हैं।

एक समय में श्री आन्ध्रपूर्ण स्वामी यतिराज रामानुजाचार्य के लिये मठ में दूध गरम कर रहे थे। इतने ही में श्रीरंगनाथ भगवान की सवारी वीथि में पधारी। मठ के सभी लोग भगवान के दर्शन करने के लिये वीथी में आ गये थे। लेकिन आप तो निश्चिन्त होकर अपने काम में ही लगे रहे। यह सब देखकर यतिराज ने कहा कि- ''आन्ध्रपूर्ण! श्रीरंगनाथ भगवान के महोत्सव के समय में जब कि भगवान वीथी में पधारते हैं तब सभी लोग सवारी के साथ चल रहे हैं और तुम अकेले यहाँ बैठे क्या कर रहे हो? इस समय में तो तुम्हें भी भगवान के कैंकर्य में जाना चाहिये। यह सुनकर श्री आन्ध्रपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले कि- गुरुदेव! यदि इस समय आपके भगवान की सेवा के लिये मैं बाहर चला जाता हूँ तो यहाँ मेरे भगवान की सेवा बिगड़ जाती है। अर्थात्- ''मेरे भगवान के लिये जो दूध गरम हो रहा है, वह उफनकर अग्नि में गिर जायेगा। इसलिये मैं भगवान की सवारी में नहीं जा रहा हूँ।'' यतिराज इस विलक्षण उत्तर एवं उनकी गुरुभक्ति को देखकर सन्तुष्ट हो गये।

एक समय में श्री आन्ध्रपूर्ण स्वामीजी के घर पर उनके देह से सम्बन्ध रखने वाले कुछ सम्बन्धी आये। जो श्रीवैष्णव नहीं थे। उन लोगों ने यहाँ पर दिन भर निवास किया। इनके जाने के पश्चात् फिर आपने सारे घर को धोकर स्वच्छ किया एवं उन अवैष्णव सम्बन्धियों के उपयोग में लाये गये घर के सभी बर्तनों को अपवित्र समझकर अग्नि में शुद्ध किया। तत्पश्चात् आपने इस बात का पश्चाताप भी किया कि आचार्य सम्बन्धहीन लोगों के सम्पर्क से घर और बर्तन सब अशुद्ध हो गये।

इस तरह स्वामी श्री आन्ध्रपूर्णाचार्यजी की आचार्यनिष्ठा महान् एवं विलक्षण थी। वे अपने आचार्य यतिराज स्वामी का श्रीपाद तीर्थ ग्रहण किये बिना जल तक नहीं पीते थे, और अन्य किसी का भी तीर्थ ग्रहण नहीं करते थे। वे अनन्य गुरुभक्त एवं आचार्यनिष्ठ महात्मा थे, जिनके जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति आचार्य भक्ति से ओत-प्रोत रहती थी।

उन्होंने श्री शालीग्राम क्षेत्र में संसार के कल्याण के लिये जगद्गुरु यतिराज रामानुजाचार्य की चरण पादुकायें इसलिये स्थापित कीं कि जिससे लोग प्रतिदिन उनकी आराधना करके संसार सागर से मुक्ति प्राप्त करें। उन्होंने अपनी अन्तिम अवस्था में चरम श्लोकार्थ के विशेषज्ञ अपने अन्तरंग श्रीवैष्णवों को अपने समीप बुलाकर कहा कि- ''आप लोग संसार में यतिराज के चरणकमलों को ही अपना रक्षक और उपाय मानकर जीवन व्यातीत करें।''

उपरोक्त सभी घटनायें अनन्य आचार्यनिष्ठा परायण स्वामी श्री आन्ध्रपूर्णाचार्यजी महाराज के जीवन की है, जो गुरुभक्त महानुभावों में श्रेष्ठतम थे, उनकी आचार्यभक्ति के गुणों की गणना कोई नहीं कर सकते हैं। वे आचार्यनिष्ठा परम्परा के मूलपुरुष हो गये हैं। जो मनुष्य ऐसे महान् आचार्य की इस महिमा का मनन करते हैं। वे निश्चय ही आचार्य के परमप्रिय भक्त बन जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं।

।। श्री प्रपन्नामृत का 55वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

विष्णु पुराण की एक कहानी के अनुसार, दुर्वासा, एक व्रत के कारण परमानंद की स्थिति में पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे, तभी एक विद्याधरी (हवा की अप्सरा) उनके पास आई और उनसे फूलों की स्वर्गीय माला मांगी। अप्सरा ने सम्मानपूर्वक ऋषि को माला दे दी, जिसके बाद उन्होंने इसे अपने माथे पर पहन लिया। अपने भ्रमण को फिर से शुरू करते हुए, दुर्वासा देवताओं के साथ अपने हाथी ऐरावत पर सवार इंद्र के पास पहुँचे। फिर भी, अपने उन्माद की स्थिति में, दुर्वासा ने माला इंद्र पर फेंक दी, जिन्होंने इसे पकड़ लिया और ऐरावत के सिर पर रख दिया। फूलों में मौजूद अमृत की खुशबू से हाथी चिढ़ गया, इसलिए उसने अपनी सूंड से माला को जमीन पर फेंक दिया।

दुर्वासा अपने उपहार के साथ इतनी बेरहमी से पेश आते देख क्रोधित हो गए और उन्होंने इंद्र को श्राप दिया कि वह तीनों लोकों पर अपने प्रभुत्व के पद से नीचे गिर जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे माला नीचे गिर गई थी। इंद्र ने तुरंत दुर्वासा से माफ़ी मांगी, लेकिन ऋषि ने अपने श्राप को वापस लेने या नरम करने से इनकार कर दिया। श्राप के कारण, इंद्र और देवताओं की ताकत कम हो गई और उनकी चमक खत्म हो गई। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, बाली के नेतृत्व में असुरों ने देवताओं के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया।

देवता पराजित हो गए और मदद केलिए ब्रह्म के पास गए। ब्रह्म ने उन्हें विष्णु की शरण लेने का निर्देश दिया। बदले में, विष्णु ने उन्हें असुरों के साथ युद्ध विराम करने की सलाह दी और अमृत (अमरता का अमृत) प्राप्त करने के लिए दूध के सागर को मंथन करने में उनकी मदद करने की सलाह दी, ताकि वे इसे उनके साथ साझा कर सकें। विष्णु ने वादा किया कि केवल देवता ही अपनी पूर्व शक्ति को पुनःप्राप्त करने के लिए अमृत पीएंगे, ताकि वे एक बार फिर असुरों को हरा सकें। देवताओं ने विष्णु की सलाह मान ली और असुरों के साथ युद्ध विराम कर लिया और इस प्रकार देवताओं और राक्षसों ने अपने महान उद्यम की योजना बनाना शुरू कर दिया।

दुर्वासा और शकुंतला

कालिदास द्वारा लिखित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के अनुसार ऋषि दुर्वासा शकुंतला से कहते है कि वे उनका स्वागत सत्कार करे, लेकिन शकुंतला जो अपने प्रेमी दुष्यंत का इंतजार कर रही होती है, ऋषि दुर्वासा ने मना कर देती है। तब ऋषि क्रोध में आकर उसे श्राप देते है कि उसका प्रेमी उसे भूल जाये इस श्राप से भयभीत शकुन्तला ऋषि दुर्वासा से माफ़ी मांगती है, तब ऋषि श्राप को थोडा कम करते हुए कहते है कि दुष्यंत उन्हें तब पहचानेगा जब वो अपनी दी हुई अंगूठी देखेगा ऋषि दुर्वासा ने जैसा कहा था वैसा ही होता है। शकुंतला और दुष्यंत मिल जाते है और सुख से अपना जीवन व्यतीत करने लगते है।

भगवान कृष्ण की मृत्यु का कारण

एक बार दुर्वासा ऋषि अपने शिष्यों के साथ द्वारका नगरी के पास से गुजर रहे थे। राह में उन्होंने अपने शिष्य श्रीकृष्ण से मिलने की इच्छा हुई। उन्होंने अपने शिष्यों को श्रीकृष्ण को बुलाकर लाने को भेजा। उनके शिष्य ने द्वारका जाकर द्वारकाधीश को उनके गुरुदेव का सन्देश दिया। सन्देश सुनते ही श्रीकृष्ण नंगे पैर दौड़े-दौड़े अपने गुरु से मिलने आए और उनसे द्वारका नगरी

चलने के लिए विनती की लेकिन दुर्वासा ऋषिजी ने चलने से इनकार कर दिया।

कृष्ण ने अपने गुरु से पुनः चलने के लिए अग्रह किया। दुर्वासा ऋषि मान गये लेकिन उन्होंने एक शर्त रखी। उन्होंने कहा कि वो जिस रथ से जायेंगे, उसे घोड़े नहीं खीचेंगें बल्कि एक तरफ से कृष्ण और एक तरफ से उनकी पत्नी रुक्मिणी खीचेंगी। श्रीकृष्ण मान गये और वह दौड़ते हुए पत्नी रुक्मिणी के पास गए। रुक्मिणी को उन्होंने गुरुदेव दुर्वासा की शर्त बताई। रुक्मिणी मान गईं और फिर दोनों गुरुदेव के पास वापस आये और उनसे रथ पर बैठने की विनती की।

ऋषि दुर्वासा का रुक्मिणी को श्राप

जब गुरु दर्वासा रथ पर बैठे, तो वह अकेले नहीं बैठे बल्कि उन्होंने अपने शिष्यों को भी रथ पर बैठने के लिए कहा। कृष्णजी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे जानते थे कि गुरुदेव उनकी परीक्षा ले रहे हैं। कृष्ण ने रुक्मिणी को रथ खींचने का संकेत और दोनों उस रथ को खींचते-खींचते द्वारका तक ले जाने लगे। बीच रास्ते में रुक्मिणी को प्यास लगी। श्रीकृष्ण ने उन्हें थोड़ा धैर्य रखने को कहा। जब रुक्मिणी नहीं मानी, तो श्रीकृष्ण ने अपने अंगुठे से जमीन पर मारकर पानी की धारा निकाल दी। रुक्मिणी ने उस पानी से प्यास बुझाई और वह कृष्णजी से भी आग्रह करने लगी कि वो भी पानी पी लें। उनके अग्रह का मान

रखते हुए श्रीकृष्ण ने पानी पी लिया। यह देख ऋषि दुर्वासा रुक्मिणी पर क्रोधित हो गये कि उन दोनों ने पानी पीकर प्यास बुझा ली जबकि उनसे और उनके शिष्यों से नहीं पूछा। इसलिए, क्रोध में आकर उन्होंने रुक्मिणी को श्रीकृष्ण से 12 वर्ष अलग रहने का श्राप दे दिया। यह श्राप बाद में पूरा भी हुआ।

भगवान कृष्ण की मृत्यु का कारण

श्राप पाने बावजूद श्रीकृष्ण और रुक्मिणी उन्हें खींचते हुए द्वारका लेकर गये। जब गुरुदेव दुर्वासा द्वारका पहुँचे, तो कृष्णजी ने उन्हें सम्मानपूर्वक सिंहासन पर बिठाया और उनका आदर सत्कार किया। भोजन में उन्होंने 56 भोग बनवाया लेकिन जैसे ही वह व्यंजन गुरुदेव के पास पहुँचा, उन्होंने सारे व्यंजनों का तिरस्कार कर दिया। उन्होंने कहा- 'ये ऋषियों के खाने योग्य भोजन नहीं है।' यह देख कृष्णजी ने उनसे उनकी इच्छा पूछी। ऋषि दुर्वासा ने कृष्णजी को खीर बनवाने के लिए कहा। उनकी आज्ञा मानी गई और कृष्णजी ने खीर बनवाई। जब खीर से भरा पतीला दुर्वासा ऋषि के पास पहुँचा, तो पहले उन्होंने खीर का भोग लगाया और फिर उन्होंने बाकी खीर भगवान कृष्ण को खाने के लिए कहा।

भगवान कृष्ण ने उस पतीले से थोड़ी से खीर खाई। ऋषि दुर्वासा ने बाकी बची खीर भगवान कृष्ण को अपने शरीर पर लगाने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर श्रीकृष्ण ने खीर को अपने पूरे शरीर पर लगाना शुरू कर दिया। उन्होंने पूरे शरीर पर खीर लगा ली लेकिन जब पैर पर लगाने की बारी आई, तो उन्होंने अपने पैरों पर खीर लगाने के लिए मना कर दिया। दुर्वासा इस बात से क्रोधित हो गये। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा- 'गुरुदेव! यह खीर आपका भोग-प्रसाद है, मैं इस भोग को अपने पैरों पर कैसे लगा सकता हूँ।'

ऋषि दुवासा कृष्णजी बातों से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- 'माधव! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम हर

परीक्षा में सफल रहे। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ तुमने जहाँ-जहाँ खीर लगाई है, तुम्हारे शरीर का वो सारा हिस्सा वज्र के समान हो जायेगा लेकिन तुमने खीर अपने तलवों पर नहीं लगाई है, इसलिए यह स्थान ही तुम्हारी मौत का कारण बनेगा।'

ऋषि दुर्वासा की बात सच हुई। एक बार कृष्ण झाडियों में सोये हुए थे और उनके पैर के पास उनका कमल चमक रहा था। दूर कहीं एक बहेलिए ने उनके चकमते कमल को अपना शिकार समझ तीर चला दिया, जो सीधे श्रीकृष्ण के पैर पर लगी और उनकी मृत्यु हो गई।

मृत्यु

पौराणिक कथाओं के मुताबिक, ऋषि दुर्वासा की मृत्यु कुरुक्षेत्र के युद्ध में उनके छोटे सौतेल भाई अर्जुन के हाथों हुई थी।

दुर्वासा धाम

दुर्वासा धाम भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के आज़मगढ़ ज़िले की फूलपुर तहसील में स्थित एक हिन्दू पवित्र स्थान है, जहाँ मझुई नदी का संगम तमसा नदी से होता है, जो गंगा नदी की एक उपनदी है। दुर्वासा फूलपुर से 6 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह जगह विशेष रूप से दुर्वासा ऋषि आश्रम के लिए प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में हजारों की संख्या में विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए यहाँ आते थे। प्रत्येक वर्ष कार्तिक-पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यहाँ संगम पर नदी के एक ओर दुर्वाषेश्वर महादेव मन्दिर स्थित है और दूसरी ओर महाबल निषाद मन्दिर है। समीप ही एक हनुमान मंदिर भी है। नदी पर एक स्नान घाट बना हुआ है।

समाप्त

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुमल।

तिरुमल पैदल मार्ग पर कार्डियक केस के उपचार में सुधार के लिए आवश्यक सूचना -

1) 60 वर्ष की आयु के बाद और मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अस्थमा, मिर्गी(एपिलेप्सी) और गठिया(अर्थराइटिस) जैसी बीमारियों से ग्रस्त होने पर पहाडियों पर चढ़ने से बचें।

2) मोटे लोगों और हृदय संबंधी स्टेंट प्रक्रिया से गुजर चुके लोगों को पहाडियों पर चढ़ने से बचना चाहिए।

3) पहाडियों पर चढने के कारण तनाव और अधिक ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कम मात्रा के कारण हृदय संबंधी गड़बड़ी और अस्थमा बढ़ सकता है।

4) पुरानी बीमारी से पीड़ित तीर्थयात्रियों को अपनी नियमित दवाइयां साथ लानी चाहिए, ताकि खुराक छूटने से अन्य जटिलताएँ उत्पन्न न हों।

5) किसी भी कठिनाई की स्थिति में कृपया चिकित्सा केंद्रों पर चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाने के लिए अलिपिरि पैदल मार्ग के 1500 कदम, गालिगोपुरम् और भाष्याकार सन्निधि पर स्थित है।

6) किसी भी चिकित्सा सहायता के लिए तिरुमल में अश्विनी अस्पताल और अन्य औषधालयों में 24×7 चिकित्सा सुविधा का लाभ उठाएँ।

7) क्रोनिक किडनी रोग के रोगियों के लिए किसी भी आपातकालीन स्थिति में स्विम्स (SVIMS) अस्पताल, तिरुपति में डायलिसिस सुविधा उपलब्ध है।

मिथ की महिला चरित

सरमा

- डॉ.के.एम.भवानी

आदिकाव्य रामायण में ऐसे बहुत से स्त्री पात्र हैं जो बहुत कम समय दिखाई देती हैं, लेकिन उनका प्रभाव बहुत गहरा है। हर मुख्य मोड़ पर रामायण की कहानी को आगे बढ़ाया नब्बे प्रतिशत पात्र स्त्री पात्र ही हैं।

जब रामायण की कहानी एक सीधे रास्ते पर चलने लगती है, तब मंथरा और कैकेई राम वन गमन के कारण बनती है। वनवास सब कुशल मंगल पूरा होने को है, तब शूर्पणखा का पात्र कहानी को मोड देती है।

लक्ष्मण की पत्नी ऊर्मिला का पात्र प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं करने पर भी ऐसा कोई भारतीय नहीं होगा, जो उसका नाम न जानता हो। जिस तरह सीता राम का अनुगमन करके पतिव्रता धर्म का पालन किया, उसी तरह ऊर्मिला पति से चौदह साल दूर रहकर महान त्याग का उदाहरण दिया। ऐसे ही कुछ नारी पात्र हैं, जो समय-समय पर कहानी को बल और सहारा देते हुए मोड़ दिया। ऐसी नारी पात्रों में 'सरमा' एक है।

सरमा विभीषण की पत्नी है। पति की ही तरह वह धर्म का पालन करनेवाली है। धर्म मार्ग पर चलने वाली है। रामायण में यह पात्र बहुत कम समय दिखती है, लेकिन मुश्किल समय में माता सीता को हिम्मत देकर उसे सांत्वना देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पात्र युद्धकांड में दिखाई देती है। जब श्रीराम रावण को हराकर सीता को ले जाने के लिए वानर सेना को सागर पार कराके लंका में कदम रखता है, तब रावण हार के डर से सीता को धोखे से लोभ वश करके अपनी ओर आकर्षित करने का दुष्ट योजना बनाता है इसलिए अपने सेवकों में माया सृष्टि करने में प्रसिद्ध विद्युतजिह्व से सीता को डराने के लिए माया से राम का सिर और धनुष-बाण का सृजन कराता है। सीता के पास जाकर उन्हें दिखा कर कहता है कि श्रीराम लंका पार करने की थकावट से सागर तट पर ही सो रहा था, तब रावण की सेना ने उसे मार दिया है। सीता श्रीराम का सर देखकर बहुत दुःखी होकर विलाप करने लगती है। उसका मनोबल टूट जाता है। इस प्रकार रावण सीता को डराकर वापस चला जाता है, तब सरमा सीता माता के पास आकर उसे समझाती हुई इस प्रकार कहती है कि- ''हे सीता! तुम दुखित मत हो जाओ। रावण ने तुमसे जो भी कहा, मैं सब सुन चुकी हूँ। रावण से दंड पाने का भय को भी छोड़कर तुम्हारे कुशल क्षेम को चाह कर मैं सब कुछ देख और सुन रही थी।''

सीता! भीरू बनकर मत रोओ। रावण जल्दी-जल्दी यहाँ से क्यों चला गया। मालूम है? मैं खुद जानकर आई थी। तेरा पति श्रीराम नहीं मरा है। वह महान व्यक्ति बिना सावधानी के ऐसा नहीं सोता है। उसके चारों ओर जो वानर सेना है, उसको पारकर श्रीराम के निकट जा पाना दानवों के लिए आसान काम नहीं है। श्रीराम को हमेशा लक्ष्मण सुरक्षा देता रहता है। अगर कभी श्रीराम सो जाने पर भी लक्ष्मण कभी सोता नहीं है इसलिए श्रीराम को मारा जाने की बात सब झूठ है। पत्थर और वृक्षों को हथियार जैसा उपयोग करनेवाले वानरों को दानव कुछ भी नहीं कर सकते हैं। श्रीराम और उसका सारा परिवार सकुशल है। तुम अनावश्यक चिंता मत करो।''

''हे सीता! श्रीराम आजानुबाहु है। विशाल नेत्रों वाले है। परम धार्मिक है। रावण कपटी है। मायावी है। तुम्हें धोखा

देने के उद्देश्य से ही श्रीराम का सर और धनुष को माया से सृष्टि कराके ले आया है। मैं तुम्हारा हित चाहकर कह रही हूँ। तुम्हें बहुत जल्दी ही अच्छे दिन आनेवाले हैं। तुम फ़िर तुम्हारे ऐश्वर्य को पाकर सुख भोग करोगी। पूरा लंका नगर वानर सेना से भर गया है। रावण के गुप्तचर सारे विषय संग्रह करके आ चुके हैं। उससे विषय की जानकारी प्राप्त करने के बाद ही रावण में डर जागृत हो गया है इसीलिए वह तुम्हें डराने तेरे पास आया है। इसी बात पर मंत्रियों से चर्चा करने के लिए ही रावण अब यहाँ से जल्दी-जल्दी चला गया है। मैं बाहर जाकर तुमसे बताने केलिए विषय संग्रह करके आ रही हूँ।''

सरमा ऐसे बोलते समय ही उन्हें युद्ध भेरियों की आवाज सुनाई देता है तो सरमा फ़िर से सीता माता से कहने लगी- ''सीता! तुम यह आवाज़ सुन रही हो। यह सैनिकों को युद्ध में भाग होने के लिए बुलाने की ध्वनि है। वह गंभीर भेरी नाद सुनो। मदगजों को तैयार कर रहे हैं। घोड़ों को रथों में बाँध रहे हैं। सेना, रथ, हाथी, घोड़ों की आवाजें सागर की आवाज़ से बढ़कर सुनाई दे रहे हैं। सारे राज मार्ग सैनिकों से भर गए हैं।''

''सीता! अब राक्षस डरने लगे हैं। अबसे तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। श्रीराम लक्ष्मण से मिलकर ज़रूर रावण का वध करेगा।'' हे मैथिली! आकाश में दिखनेवाले प्रत्यक्ष भगवान सूर्य को देखो। यह सूर्य भगवान ही सब प्राणियों को आभा देने वाला है। अब से तुम श्रीराम का विजय चाहकर सूर्य भगवान की आराधना करो।''

इस प्रकार सीता माता को सरमा उपदेश देकर माता का मन शांति पाने में मदद करती है।

सरमा की बातों से थोड़ा शांति पाई माता सीता को और कुछ खुशी दिलाने के लिए सरमा अदृश्य रूप से रावण के महल में जाकर उनकी बातें सुनकर फिर आशोकवन में सीता के पास वापस आती है। तब उसे सीता माता कमलों के बिना बैठी लक्ष्मी माता लगती है। सरमा आते ही माता सीता उसे स्नेहपूर्वक आलिंगन करती है। अपने बगल में ही बिठती है और पूछती है कि ''हे सरमा! तुम अब क्या जानकर आई हो? सब मुझे सच-सच बाताओ। ''सीता के पूछने पर सरमा इस प्रकार कहती है- ''हे वैदेही! रावण की माता रावण से मिलने आई है। उसके साथ अविद्युद्रु नामक बूढ़ा मंत्री भी आया था। वे दोनों श्रीराम से संधि करने के लिए कहा। तुम्हें श्रीराम को सौंपने के लिए बहुत मिन्नतें की। भविष्य वाणी बताए कि तुम्हें श्रीराम को नहीं सौंपने पर लंका नगर और दानवों के सत्यानाश होने की संभावना है। वे जन स्थान में श्रीराम हजारों राक्षसों को अकेला मारने की बात को भी याद दिलाए। वे ये बातों भी रावण को याद दिलाए कि हनुमान शत योजन विस्तीर्ण सागर को पार करके आकर लंका दहन करके चला गया। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। इन्हें हम बुरा या अपशकुन समझना होगा। इतना कहने के बाद भी रावण उनकी बातों को नहीं सुना। कितने लोग कितने प्रकार कहने पर भी रावण तुम्हे छोड़ने को तैयार नहीं है। लालची आदमी धन छोड़ने को तैयार नहीं होने की तरह, रावण तुम्हें छोड़ने को तैयार नहीं है। हे सीता! जब तक रावण जिंदा है, तब तक तुम्हें नहीं छोड़गा। वह और उसके मंत्रिगण युद्ध में जान देने के लिए भी तैयार हैं। रावण को किसी का डर नहीं है। जान चला जाने का भी डर नहीं है। युद्ध में सारे राक्षस मारे जाने पर भी वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। सीता! रावण के मरने पर ही तुम्हें मुक्ति मिलती है। रावण तेरे ऊपर इतना मोह और हठी हो गया है लेकिन हे सीता! तुम मत डरो। तुम्हारे आँखों में देखने पर मुझे लगता है कि श्रीराम ज़रूर रावण को मारकर तुझे अयोध्या ले जाएगा। अबसे तुम दुखी मत होओ।''

इस प्रकार सरमा सीता माता को बहुत समझाकर, उसके डर को दूर करके सीता में आत्मविश्वास भरती है। प्रत्यक्ष भगवान सूर्य की उपासना करने की सलाह देकर श्रीराम के विजय मार्ग को सुगम बना देती है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

75) तिरुपति/तिरुमल - (तिरुवेंकटम) आदिवराह क्षेत्र

चेन्नै-मुंबई रेल मार्ग में रेणिगुण्ठा से 12 कि.मी. पर तिरुपति रेल स्टेशन है। चेन्नै से सीधी रेल गाडी है। सभी मुख्य स्थानों से रेल एवं बस की सुविधा है। यह बडा शहर होने से सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

कीलतिरुपति - (पर्वत के तल पर) गोविन्दराज पेरुमाल मंदिर।

मूलमूर्ति - गोविन्दराजपेरुमाल, पूर्वाभिमुखी, भुजंग शयन।

तायार (माताजी) - पुण्डरीकवल्लि।

तीर्थ - आल्वार तीर्थ।

यह मंदिर आचार्य रामानुज द्वारा स्थापित एवं प्रतिष्ठित है। यहाँ आण्डाल, रामानुज आदि की सन्निधियाँ है। यह मंदिर तिरुपति स्टेशन के पास है। रामर कोविल- यहाँ लक्ष्मण, सीता समेत रामजी के दर्शन कर सकते हैं। यह मंदिर गोविन्दराजस्वामी मंदिर से एक कि.मी. दूरी पर है।

तिरुमल मंदिर मात्र ही 108 दिव्य देशों में स्थान पाई है।

तिरुमल - यहाँ सात पर्वत हैं। मंदिर शेषाचल पर्वत पर स्थित है। इसे सप्तगिरि क्षेत्र भी कहते हैं। तिरुपति शहर से सोपान मार्ग में (पैदलयात्रा) जा सकते हैं। यहीं परंपरागत मार्ग है, जो उत्तम है - लगभग 15 कि.मी. तिरुपति से तिरुमल जाने आजकल बस की सुविधा है। (मोटर घाडी के द्वारा) सात पर्वतों के नाम - वेंकटाद्रि, शेषाद्रि, नीलाद्रि, गरुड़ाद्रि, वृषभाद्रि, अंजनाद्रि, नारायणाद्रि।

मूलमूर्ति - वेंकटाचलपति, तिरुवेंकटमुड़ैयान, तिरुवेंकड़त्तान, श्रीनिवासन, बालाजी (उत्तर भारत में प्रचलित नाम) पूर्वाभिमुखी, शंख, चक्र आदि से भूषित खड़े दर्शन देते हैं। वक्षस्थल में अलर्मेल्मंगतायार श्री लक्ष्मी शोभायमान है।

पंचबेरम् - ध्रुवबेरम्(मूलमूर्ति), कौतुकबेरम्(भोग श्रीनिवासमूर्ति), स्नपनबेरम्(उग्रश्रीनिवासमूर्ति), बलि बेरम्(कोलुवु श्रीनिवासमूर्ति), उत्सवबेरम्(मलयप्पस्वामी)।

तायार (माताजी) - अलर्मेल्मंगतायार - वक्षस्थल पर विराजमान हैं। इनका अलग मंदिर तिरुचानूर अलमेल्मंगापुरम् में है। यहाँ गर्भगृह में ही सीता, लक्ष्मण समेत रामचन्द्र मूर्ति एवं रुक्मिणी समेत कृष्ण भगवान की मूर्तियाँ विराजमान है।

तीर्थ - (शेषाचल) स्वामिपुष्करिणी, पापविनाश तीर्थ, आकाशगंगा, कुमारधारा तीर्थ आदि पवित्र पुण्य तीर्थ हैं।

विमान - आनन्दनिलय विमान।

प्रत्यक्ष - तोण्डमान चक्रवर्ति, आरुमुखन।

आदिवराह सन्निधि - स्वामिपुष्करिणी के उत्तर पश्चिम कोने में आदिवराह (गोद में लक्ष्मी सहित) मंदिर में आदिवराह मूर्ति-पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं। प्रथम पूजा, प्रथम नैवेद्य, प्रथम दर्शन का भाग्य भगवान वराहस्वामी को होने के बाद श्रीनिवास को पूजा करते है। भक्तगण आदिवराह भगवान के दर्शन के बाद ही श्री वेंकटाचलपति के दर्शन के लिए जाते हैं।

प्रतिदिन पहले वराह भगवान को ही भोग (नैवेद्य) समर्पित किया जाता है। उसके बाद ही श्री वेंकटाचल भगवान को भोग लगाते हैं। क्षेत्र पालक आदिवराह भगवान है जिन्होंने श्री वेंकटेश भगवान का स्वागत कर आश्रय स्थान देकर आराम से ठहराया और उनकी देख रेख का भी प्रबन्ध कराया।

तिरुमल/तिरुपति क्षेत्र का विवरण - वराह पुराण आदि कई पुराण एवं प्राचीन तमिल साहित्य में विवरण प्राप्त है। यह अति प्राचीन वेद काल का दिव्य क्षेत्र माना जाता है। यह एक प्राचीन मंदिर है। प्रतिदिन 50-70 हजार तक के यात्रा भक्त यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। सुप्रभात से लेकर एकांतसेवा तक (पूजा काल छोडकर) भगवान के दर्शन कर सकते हैं। यहाँ लोग मनौतियाँ करते हैं और उसको पूरा करने यहाँ आते हैं। मुंडन केश समर्पण यहाँ बहुत प्रचलित है। निम्नलिखित श्लोक से इस दिव्य क्षेत्र का माहात्म्य दर्शित है।

यद्यदिच्छति वै जन्तुः मनसा ईप्सितं नृप।
तथा सिध्यति तत्सर्वं गिरेरस्य प्रभावतः।।

हमारे मन में जो कामनाएँ होती हैं, - चाहे लौकिक या पारलौकिक - सभी कामनाओं की सिद्धि होती है। यह

वेंकटाद्रि का प्रभाव हैं। सप्तगिरि के दर्शन मात्र से ही और वेंकट भगवान के दर्शन से अपरिमित पुण्य लाभ होता है।

आल्वारों के द्वारा मंगलाशासित यह मंदिर भारतभर में - आजकल विदेश में भी प्रचलित है। भारत के कोने-कोने में और अमेरिका आदि देशों में भी वेंकटेश भगवान के मंदिर निर्मित हैं। शेषाचल पर स्वयं आविर्भूत श्री वेंकटाचल भगवान समभंग मुद्रा में (खडे विराजमान है। जो बड़े वर प्रसादी हैं।)

मूलवर - तायार(माताजी) पद्मावती तायार अलर्मेल्मंगा। पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देती है।

तीर्थ - पद्मसरोवर।

बताया जाता है कि यहाँ पहले कृष्ण मंदिर था। अब पद्मावती सन्निधि के बाजू में श्रीकृष्ण एवं सुंदरराज पेरुमाल की सन्निधि है। गोपुर - द्वारा कृष्ण सन्निधि के सामने हैं। भगवान के आदेशानुसार राजा तोण्डमान ने इन मंदिरों का निर्माणकर कई कैंकर्य किये हैं। बाद विजयनगर देश के राजाओं से मंदिर में वर्ष भर में ब्रह्मोत्सव आदि कई उत्सव मनाये जाते हैं। भक्त लोगों की मनौती के अनुसार (मंदिर की ओर से) तिरुकल्याण उत्सव का भी प्रबन्ध किया जाता है। भक्तों के द्वारा भेंट समर्पण प्रतिदिन लाखों रुपए तक होते हैं।

भगवान रामानुज ने तिरुपति/तिरुमल की आराधना पद्धति का निर्णय कर प्रवर्तन किया जिसका पालन आज भी किया जाता है। तिरुमल में वैखानस आगम एवं तिरुचानूर में पांचरात्र आगम पद्धति का पालन करते है।

मंगलाशासन - 10 आल्वार, कुल 202 दिव्य कीर्तन। तिरुमल मंदिर के अहाते में, योगनरसिंह, वरदराज एवं रामानुज के मंदिर हैं।

इसके अलावा तिरुपति के निकट निम्न-लिखित क्षेत्रों के मंदिर को भी भक्त दर्शन के लिए जाते हैं। श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी मंदिर - श्रीनिवासमंगापुरम्, वेदनारायणस्वामी मंदिर - नागुलापुरम्, श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी मंदिर - नारायणवनम्।

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

क्रमशः

श्रीराम की शरणागति हेतु हनुमान का योगदान

- श्री कमलाप्रसाद चौरसिया

सीताजी की खोज में हनुमान लंका में कक्ष-दर कक्ष घूम रहते हैं। अपने मन की संभावना निवारण के लिए उन्होंने रावण के शयन-कक्ष में भी दृष्टि डाली किन्तु 'सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीख बैदेही' के अनुभव ने उन्हें विस्मित तो किया किन्तु दैवयोग से, कहिए कि श्रीराम की कृपा से उन्हें अन्नत मनोहारी, मन को प्रसन्नता से भर देने वाला दृश्य दिखाई दिया-भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा। रामायुध अंकित गृह शोभा बरनि न जाई। नव तुलसिया वृद तहँ देखि हरषि कपिराई।' यह प्रभु राम की इहैतुकी कृपा का परिणाम है कि उनका दास निरन्तर हुलास और 'होइहि काजु मोहि हरष विसेखी' की भावना के साथ आगे बढता चला जा रहा है। लोकोक्ति है की- 'रामकाज लगि तव अवतारा'। तब रामकाज होने के संदेह के लिए स्थान ही कहाँ है। उसे प्रेरणा और सफलता अनायास ही मिलती जाती है, वह निरंतर स्फूर्त रहता है।

विभीषण का मिल जाना प्रभु की लीला का महत्त्वपूर्ण पात्र का उपलब्ध हो जाना है जो विधिवश पूर्वनियोजित होता है। हनुमान ने उसे पाकर अपने को धन्य तो माना ही, प्रभु के प्रसाद-संपादन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम माना। तभी तो वह 'गद्-गद् होकर उच्चार उठे- 'एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु तो होई न कारज हानि।' और यह 'पहचान' सचमुच ही उनके लिए तारणहार सिद्ध हुई। जहाँ एक ओर उनका अंग-भंग होने जा रहा था, वहीं विभीषण ने उचित समय पर प्रकट होकर रावण की बुद्धि ही पलट दी- 'नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मानिअ दूता। आन दण्ड कुछ करिअ गोसाई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई।।' रावण को प्रसन्नता हुई जैसे वह कुछ अनुचित करने के पाप से बच गया हो, तुरन्त बोला- कवि के ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाई। तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लागाई'। उसकी आज्ञानुसार राक्षसों ने मिलकर प्रसन्नतापूर्वक सोने की लंका जला डाली। कहने की आवश्यकता नहीं कि विभीषण ने अपनी साधु-स्वभाव की प्रतिष्ठा बनाये रखते हुए अपना कर्त्तव्य का निर्वाह किया। 'सचिव के कारण होने वाले विनाश से उसकी रक्षा करना चाहता था। सचिव वैद गुर तीन जों प्रिय बोलहिं भय आस। राज, धर्म, तन, तीनि कर होइ बेगिही नाश।' उसकी भावना शत-प्रतिशत उसे विनाश से बचाने की थी; किन्तु विनाशकाले विपरीत बुद्धिः,' कोई क्या करे?।

इसके विपरीत हुआ वहीं जिसको टालने के लिए मंदोदरी निरंतर पगतर पड़ी अरण्य-रोदन करती रही, सुमति के विमल अंकुरण की प्रतीक्षा में निवेदन करती रही। बहुत कुछ समझायिये के बाद भी जब रावण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

'तव उर कुमति बसी बिपरीता' कहकर जैसे उसने जले पर नमक छिड़क दिया हो- 'सुनत दिसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट कृत्यु अब आई। जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा। कहसि न खल अस को जग माहीं। भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं। ममपुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सब मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती। अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहीं बारा।' जैसे उसे इसी क्षण की प्रतीक्षा रही हो- ज्येष्ठ की आज्ञा प्राप्त हो गई; अतः संग लै नभ पथ गयऊ। सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ-रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि। मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि।'' यह कहना इसलिए जरूरी या ताकि कोई उस पर कोई भ्रात द्रोही होने का दोष न मढ़ सके।

ऐसे ही अवसर पर हनुमान संकटमोचन का काम करते हुए बोल उठे- 'सुनि प्रभु वचन हरष हनुमाना। शरणागत वत्सल भगवाना।' हनुमान के मन को प्रबोध देते हुए रामजी ने बिना किसी विलम्ब किए कहा- 'शरणागत कहुँ जे तजहिं हित अनहित अनुमानि। ते नर पाँवर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि।; और आदेश दे दिया- 'उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत। जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत।' 'जय हो कृपालु रामजी की, जय हो' आदि उल्लास के साथ नारा लगाते हुए वे विभीषण को राम के सामने ले गये। उनके स्यामल गात प्रनत भय मोचन' रूप की छबि ने उसके मन का विषाद हर लिया; और जो अब तक नहीं कहा गया था, कह 'बैठा-नाथ दसानन कर में भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता। सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहिं तम पर नेहा।' अपने को उलूक कहकर जैसे उसे परमशान्ति मिली हो, 'शरणागति की कामना व्यक्त कर बैठा, 'श्रवन सुजस सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर। त्राहि-त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर' और चरणों में गिर पड़ा- 'दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदय लगावा। अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी।

उसके मन को अपना बनाकर रामजी ने उसे इतना ठोंक-पीट लिया कि अपने काम की बात-बता बैठे- 'सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा।' विभीषण ने भी वचन चातुरी से काम लिया - आपका काम है रामजी, आप ही करिये- 'जहापि तदापि का प्रयोग करते हुए कहा, 'जहापि तदापि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई।' उन्होंने 'उसके कोटि सिंधु सोषक तब सायक' को कोई महत्त्व नहीं दिया और 'प्रथम प्रणाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।' भला हो विभीषण तेरा, तेरी ही सहायता से मुझे नील-नल जैसे भाई प्राप्त हुए।

वैसे तो वे हमारी ही सेना में थे किन्तु अभी तक हनुमान की भाँति अपनी कीर्ति को छुपाये रहे। न जाने कितने वीर हमारे बीच हैं जिनमें अलौकिक गुण हैं और जिन्होंने मेरी सहायता हेतु अवतार लिया है। लक्ष्मण को बुरा तो लगा होगा कि मैंने उनकी 'नाथ दैव कर कवन भरोसा' जैसे वचन को काट दिया किन्तु वे अब सहज हो गये होंगे कि भैया जो करते हैं, उसका एक अलग ही विशेष महत्त्व होता है।

जून 2025

02-10 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का ब्रह्मोत्सव

06-10 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव

07-15 अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव

09-11 तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक

17-19 तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामी का अवतारोत्सव

30 से जुलाई 02 तक श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का साक्षात्कार वैभवोत्सव

(आयुर्वेद)

आध्यात्मिकता... आरोग्य

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

मंदिर केवल आध्यात्मिक-इमारतें ही नहीं हैं। बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक केन्द्र भी हैं। शिल्पकला के साथ-साथ संगीत, नृत्य कलाओं के निलय बनकर विलसित हुए हैं। आलयों का दर्शन केवल आध्यात्मिक परक ही नहीं हैं। अपनी इच्छाओं की पूर्ति केलिए देवताओं से मन्नत माँगने या मानसिक प्रशांतता प्राप्त करने के लिए ही हैं। मंदिर जाने के पश्चात् पालन करने वाले अनेकों अंशों में कई आरोग्य संबंधी अंश जुडे हुए हैं। वे निम्नलिखित हैं-

आह्लाद भरित परिसर-प्रान्त

आलयों के निर्माण के लिए हमारे पूर्वजों ने विशाल प्रदेशों को चुन लिया। प्राचीन आलय, नदी के तटों या पहाडों पर दिखायी पडते हैं। आह्लाद भरित प्रकृति, सुंदर परिसर-प्रान्त शरीर को आराम व मन को प्रशांतता पहुँचाते हैं। किसी समय, आलयों के प्रांगण आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ संगीत, नृत्य, शिल्प-कला, ज्योतिष, वास्तु इत्यादि के लिए निलय रहते थे। आलयों में उत्कीर्णशिल्पों में पौराणिक गाथाएँ व विशेष अंश होते हैं। वे संस्कृति पर अवगाहन कराते हैं। साम्प्रदायिक मूल्य बताते हैं। सांसारिक विषयों से सुंदर विचारों की ओर मन को मोड़ते हैं। वैसे ही दैव-दर्शन के पश्चात्... आलय में कुछ देर के लिए बैठने का आचार निर्देशित किया हमारे बुजुर्गों ने। इसका कारण क्या है?... आलय के चारों ओर औषधी संबंधित पेड़ पालते हैं। उनके तले बैठते वक्त, ध्यान करते समय... हम श्वास लेते समय ली जाने वाली वायु हमारे... फेफडों को साफ करती है। व्याप्त क्रिमियों का नाश करती है। वहाँ का वातावरण, मन के आंदोलन को दूर करता है।

पुष्करणियाँ-स्नान-घाट

नदी के तटों पर विलसित आलयों के लिए स्नान-घाट; और अन्य क्षेत्रों पर हमारे पूर्वजों ने पुष्करणियों की व्यवस्था करायी। तडके समय ठंडे पानी से स्नान करने से शरीर को स्वस्थता मिलती है। एकाग्रता और दारुढ्यता की वृद्धि होती है। मुख्य रूप से विशेष अवसरों पर याने पुष्कर, कुंभ, मेलाओं जैसे उत्सवों के समय... नदी के जलों में देवता लोग आ विराजते हैं; ऐसा कहा जाता है। इसी तरह... उन-उन संदर्भों के अवसर पर पीठाधिपति, साधु, योगी आदि लोग आकर स्नान करते हैं। उसके द्वारा वह जल और पवित्र बनता है; ऐसा एक विश्वास भी है।

दैव-दर्शन

आलयों में देवता-मूर्तियों की रूप-कल्पना अत्यन्त निर्दिष्ट विधान से की जाती है। विग्रहों की तैयारी के लिए शिलाओं का चुनना, मन्त्र-पूर्वक उनका संचय करना, शास्त्रानुसार प्रतिमा का उत्कीर्ण करना, आगम शास्त्र के नियमों के अनुसार उनकी प्राण-प्रतिष्ठा करना... इस सबका निर्वहण बड़ी श्रद्धा व भक्ति के साथ किया करते हैं। तद्द्वारा वे, विग्रह दिव्य शक्ति को प्राप्त करते हैं। उनके दर्शन करके, पूजा करनेवालों में वह शक्ति प्रसारित होती है। उनका मन निर्मल बनता है। इति (उपद्रव)-पीडाएँ दूर होती हैं; ऐसा शास्त्र उद्घोषित करते हैं।

नमस्कार (प्रणाम)

दैव की सन्निधि में सिर झुकाकर नमस्कार करने से... विग्रहों में निक्षिप्त शक्ति भक्तों के मेधस में प्रवेश करती है।

इतना हो नहीं, इससे व्यायाम का अभ्यास भी होता है। विनायक के सामने उठ-बैठ करना भी एक तरह से व्यायाम ही है। कुहने, पैर, गरदन, कमर, गुल्फ इत्यादि शरीर के अवयवों को आसानी से हिलने का मौका मिलता है। अनावश्यक चरबी गल जाती है। साष्टांग नमस्कार करने से शरीर के सारे अंग जमीन से छूते हैं। यह शरीर के लाघव व उसके द्वारा आरोग्य के लिए सहायकारी बनता है।

प्रदक्षिण (परिक्रमा)

दैव-दर्शन के लिए जाने के समय, आलय-प्राकार के अंदर पत्थर के रास्ते पर बिना पादुकाओं के चलने से, उस रगड़ से, पाँवों की नाडियाँ मिलने के प्रदेश प्रेरेपित होते हैं। उनसे अनुसंधानित शरीर के अवयवों के चलने का तरीका ठीक बनता है; ऐसा कहा जाता है।

तीर्थ-प्रसाद

मंदिर में, भक्तों में वितरण किया जाने वाले तीर्थ में औषधीय गुण रहते हैं। वे, शरीर की शुद्धि करती हैं। इसी तरह स्वामीजी को अर्पित सात्विक पदार्थों से बने प्रसाद के स्वीकरण से जीर्णशक्ति सुधर जाती है। कुछ आलयों में दिये जाने वाले अभिषेक-जल, हल्दी का पानी, नींबू का रस, विभूति(भस्म) इत्यादि का भी भक्त लोग सेवन करते हैं। ये सब आरोग्य प्रदायक ही हैं।

मंत्र-जप

प्रत्येक दैव-पूजा के लिए एक निर्णीत शास्त्र-विधि रहती है। दैव-पूजा के अन्तर्गत उच्चरित मंत्र, बीजाक्षरों से जुड़े रहते हैं। बडों के कहे अनुसार... व्यक्तियों में और आस-पास के वातावरण में चेतनता पैदा होती है। आरोग्यदायक, अभीष्ट-सिद्धि प्रदान करने की शक्ति मंत्रों को है। दैव का नाम या मंत्र का जप करना चाहने वाले भक्त लोगों को मंदिर में विराजित मूर्ति के सामने, आवरण के प्रशान्त वातावरण में एक जगह बैठना चाहिए। मंत्र-जप करना या ध्यान करना, उत्तराभिमुखी हो करना चाहिए। क्यों कि उत्तर दिशा में अयस्कान्त शक्ति रहती है। उसके प्रभाव से रक्त-प्रसरण ठीक चलता है।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

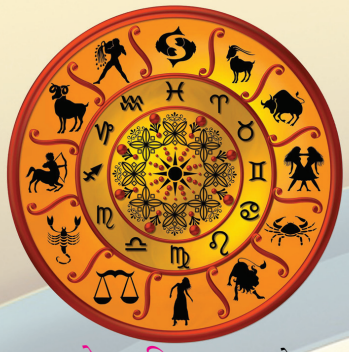

मई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - मास के आरम्भ में ही बुध का परिवर्तन कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं के निवारण में सहायक। कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सुखद, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में उन्नति। जमीन-जायदाद प्राप्ति योग, निर्माण कार्यों में सफलता, नए कार्यों का आरम्भ सोच समझकर करें।

वृषभ राशि - स्वास्थ्य सामान्य, धन लाभ एवं गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। राजकार्य में प्रगति, अपने इष्ट-मित्रों का सहयोग, कौटुम्बिक समस्याओं का निवारण। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा, किसी नए कार्यों की योजना बनेगी। निरर्थक भागदौड़-यात्रा से परेशानि-थकान, छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता।

मिथुन राशि - यह माह आपके लिए मिश्रमफलदायक रहेगा, मासारम्भ में वृथा मानसिक तनाव एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी, कार्यों में श्रम साध्य सफलता, कार्य व्यवसाय सम्बन्धी योजनाओं में समय व्यतीत होगा, सन्तान के भविष्य की चिन्ता बनी रहेगी। छात्रों के लिए सुखद समय, विद्या-बुद्धि का विकास रुके कार्यों में सफलता।

कर्कटक राशि - आय का स्त्रोत बढेगा, सुन्दर-सुखद, आनन्ददायक वातावरण। मन में नूतन विचारों का प्रादुर्भाव, विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। घर-परिवार की चिन्ता बनी रहेगी, आर्थिक समुन्नति,रोजी-रोजगार में समुन्नति। मंगल के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी और खर्चों में वृद्धि।

सिंह राशि - मासारम्भ में सूर्य भाग्यस्थान होने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। स्वास्थ्य समस्या, कांतिक्षय, निरर्थक वाद-विवाद, पारिवारिक-कौटुम्बिक उत्तरदायित्व में कठिनाई का सामना करना पडेगा। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण गुप्त चिन्ता व तनाव रहेगा।

कन्या राशि - बुध अष्टमस्थ होने से अव्यवस्थित दिनचर्या, वायु-विकार, बनते कार्यों में विघ्न तथा धन हानि के संकेत हैं। कार्य क्षेत्र में उदासीनता, गृहस्थ जीवन सौहार्द्र पूर्ण, मासपर्यन्त धन का आवागमन बना रहेगा। छात्रों के लिए सुखद समय जिससे शैक्षणिक विकास, इष्ट-मित्रों का सहयोग, भूमि-जायदाद में प्रगति, उत्तरार्ध उत्तम रहेगा।

तुला राशि - शुक्र उच्चस्थ होने के कारण परिवार में शुभ समाचार तथा व्यवसाय में धन लाभ की प्राप्ति होगी। शारीरिक स्थिति सामान्य, तनाव-विवाद, चोट-दुर्घटना से कष्ट होगी, मंगल नीचस्थ होने से। पारिवारिक कलह रहने से मानसिक तनाव बढ़ेगा। व्यापार सामान्य, शक्ति तेज की वृद्धी, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

वृश्चिक राशि - अपने मन में आते हुए दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करने से सफलता मिलेगी और मान-प्रतिष्ठा, उन्नति होगी। मंगल नीचराशि में होने के कारण बनते कार्यों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी पेशों वाले लोग अपने गुप्त विचार को किसी के सामने प्रकट न करे धोखा मिल सकता है। यात्रा व्यथा, शैक्षणिक उदासीनता, व्यापार में श्रमपूर्ण प्रगति।

धनुष राशि - शनि की ढैय्या रहने से मन में तनाव एवं अशान्ति, पारिवारिक उलझनें तथा बन्धुओं से मतभेद भी रहेंगे। स्वास्थ्य सामान्य, कौटुम्बिक निर्वहन में बाधा, उद्योग-धन्धे में उदासीनता, आर्थिक समस्या के कारण मन खिन्न, छात्रों के लिए उत्तम समय। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में संलग्नता, सहयोगियों का पूर्ण सहयोग।

मकर राशि - शारीरिक सुख, राजकीय कार्यों में सफलता, सूर्य चतुर्थस्थ उच्चस्थ संचार करने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, संतान सुख, बन्धु-बान्धवों के साथ मनमुटाव। व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति, सामाजिक संलग्नता, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, मांगलिक कार्यों में धन व्यय।

कुंभ राशि - शनि द्वितीयस्थ संचार करने से शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। मनोबल-धर्मबल की वृद्धि, दुर्बलता का निवारण, सामयिक कार्यों में श्रमपूर्ण सफलता। मंगल की दृष्टि रहने के कारण व्यर्थ की भागदौड़, परिवार में मनमुटाव व निकट-बन्धुओं से टकराव के हालात पैदा होंगे। नौकरी क्षेत्रों में सुखद।

मीन राशि - स्वास्थ्य सामान्य, उदर-वायु विकार, दौड़-धूप अधिक, परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। अपने वाणी व्यवहार पर नियन्त्रण रखे वरना भुगतना पडेगा, यत्र-तत्र अनावश्यक यात्रा, उद्योग-व्यापार में अनुकूलता, गृह-भूमि कार्यों में लाभ। राहु के संचार हट जाने से कुछ रुके हुए कार्यों में सुधार होगा। शिव आराधना श्रेयस्कर होगा।

(नीतिकथा)

तीन रत्न

- श्री के.रामनाथन

राजा महेन्द्रवर्मा अपने विधर्भ देश का सुशासन कर रहे थे। उनके राज्य में देवसेन नामक एक किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे। वह किसान अपने पुत्रों के साथ खेती में काम करके अपना जीवन बिताता था। वह बड़ा परिश्रमी और ईमान्दार था। एक दिन वह बूढा किसान बीमार पड़ गया। उसने मरने के पहले अपने तीनों पुत्रों को समझाया कि तुम लोग हमेशा एक दूसरे पर स्नेह रखकर एकता से रहो। उसके बाद उसने अपने बड़े पुत्र को बुलाकर कहा, ''तुम पूजागृह में जाओ, और वहाँ लाल रंग की एक छोटी डिबिया होगी, उसे ले आओ।'' पिता की बात पर बड़े पुत्र ने पूजा गृह में एक कोने में रखी गयी लाल रंग की डिबिया ले आकर पिता के हाथ में दिया।

पिता ने दूसरे पुत्र के हाथ में उसे देकर खोलने के लिए कहा। दूसरे ने ऐसे ही किया। तीनों पुत्रों ने देखा कि उस डिबिया में तीन रत्न हैं। पिता ने तीसरे पुत्र से कहा, ''उन रत्नों को बाहर लो।'' तीसरे ने ऐसे ही किया। पिता ने अब तीनों पुत्रों को बताया, ''तीनों रत्न तुमलोगों के लिए मैंने सुरक्षित रखा है। ये रत्न मेरी ओर से दी जाने वाली संपत्ति है। लेकिन इसका उपयोग तभी करना जब खेती का काम रुक जाता है और परिवार चलाना असंभव हो जाता है, तब इन रत्नों को बेचकर संकट से मुक्त हो जाना।'' थोड़ी समय के बाद बुजुर्ग किसान मर गया और वे तीनों पुत्र अपनी खेती में काम करके जीवन यापन करने लगे।

एक समय ऐसा आया कि उस वर्ष बारिश के न बरसने के कारण सूखा पड़ गया और खेती का काम भी रुक गया। इससे उस किसान परिवार को जीवन चलाना मुश्किल हो गया। तब बड़े ने अपने दोनों भाइयों से कहा कि पिता की बात के अनुसार अब हम उन रत्नों को बेचकर घर की व्यवस्था संभाल लेंगे। बड़े की बात पर दोनों मंजूर हुए। उसके बाद बड़े ने पूजागृह में जाकर रत्न रखी गयी डिबिया ले आकर अपने दोनों भाइयों के सामने खोलकर देखा। वे तीनों धक्के में रह गये, क्योंकि वहाँ तीन रत्नों के बदले सिर्फ दो रत्न मात्र थे। उन तीनों को इस बात पर दुविधा हुई कि घर के अन्दर सुरक्षित रखे गये रत्न की चोरी कैसे हुई होगी?

आखिर उन तीनों ने निश्चय कर लिया कि राजा के पास जाकर शिकायत करेंगे और वे चोर को पकड़ लेंगे। वे तीनों राजा से मिलने गये। राजा ने उन तीनों की बातें ध्यान से सुनी और पास में बैठे अक्लमंद मंत्री अजयमित्र को समस्या का हल निकालने की आज्ञा दे दी। मंत्री ने भी उसे स्वीकार कर लिया। उसके बाद राजा ने उन तीनों को विश्वास दिलाकर घर भेज दिया।

कुछ दिन बाद उन तीनों पुत्रों के घर में राजा के अक्लमंद मंत्री एक पंडित के वेष में आये थे। उन्होंने उन तीनों पुत्रों से कहा कि मैं राजा से मिलने आया हूँ। मैं दो दिन यहाँ ठहरना चाहता हूँ। क्या आपलोग उसके लिए अनुमति देंगे? तीनों ने उनको अपनी, अतिथि के रूप में स्वीकार कर लिया। उस दिन शामको जब तीनों अपने खेत में काम करके वापस आये थे, तब पंडित ने उन तीनों को अपने पास बिठाकर एक कहानी सुनायी। पंडित ने यह भी कहा कि पूरी कहानी सुनने के बाद मैं कुछ सवाल करूँगा, उसका उचित जवाब देना। इससे तीनों बड़े ध्यान से कहानी सुनने लगे।

पंडित ने कहा, ''एक बार एक गुरु के गुरुकुल में अनेक लड़के और लड़कियां पढ रहे थे। उन सब की पढाई पूर्ण होने वाली थी। इतने में एक लड़की का विवाह तय हुआ। उसने अपने गुरु से मिलकर उचित दक्षिणा देना चाह। गुरु ने कहा कि मुझे

कोई विशेष दक्षिणा नहीं चाहिए। जिस दिन तुम्हारी शादी होती है, उस दिन रात को तुम सारे आभूषणों से अपने को सज्जित करके अकेले मुझसे मिलने आओ। यही मेरी गुरुदक्षिणा है। लड़की ने भी उसे मान लिया। गुरु के कहे अनुसार शादी के बाद उस दिन रात वह अपने पति की अनुमति से सारे आभूषणों से सज्जित करके गुरु से अकेले मिलने आ रही थी। बीच में एक जंगल को पार करना था। वहाँ छिपा रहा एक चोर ने उसका रास्ता रोकते हुए धमकी दी कि सारे आभूषण निकालकर दे दो, नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा। लड़की ने यही कहा, मैं अपने गुरु को दिये वादा के अनुसार उनसे मिलने जा रहा हूँ। वापस लौटते समय मैं अपने आभूषण दे देता हूँ। उसकी बात पर विश्वास करके चोर ने उसे जाने देकर वहीं इंतजार में बैठा रहा।

वह लड़की अपने गुरु से मिली, उसकी हिम्मत और कार्यकुशलता से गुरु प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर भेज दिया। जब वह लड़की वापस लौट रही थी, तब उस चोर से मिली। वह चोर के हाथ में अपने आभूषण देने तैयार हुई। उसके कार्य को देखकर चोर अवाक रह गया। उसकी ईमानदारी ने उसमें बड़ा परिवर्तन कर दिया। उसने अपने व्यवहार के लिए उससे क्षमा माँगी और उस दिन से चोरी करना छोड़ दिया। अब वह अपने पति के पास सुरक्षित आ पहुँची। यही कहानी है। अब तुम तीनों मेरे इस सवाल का सही जवाब देना, इस कहानी में अनेक उत्तम लोगों को देखा है। उनमें महान उत्तम कौन है?''

पंड़ित के सवाल के लिए प्रथम पुत्र ने जवाब दिया कि विवाह हुए उस दिन रात अपनी पत्नी को गुरु के यहाँ भेजा उसका पति ही महान उत्तम है। अब दूसरा पुत्र ने जवाब दिया कि मेरे विचार में गुरु ही महान उत्तम हैं। क्यों कि उन्होंने अपनी शिष्या की हिम्मत के बारे में जानने के लिए जो कार्य किया वह सचमुच सराहनीय है। आखिर तीसरा पुत्र ने जवाब दिया मेरे विचार में वह चोर ही महान उत्तम है। क्योंकि हाथ मिलने वाले आभूषणों की चोरी न करके उसने उस लड़की को ऐसे ही भेज दिया। तीनों का जवाब सुनकर पंडित के वेष में आया। वह अक्लमंद मंत्री ने असली चोर को पहचान लिया।

राजा ने मंत्री से पूछा कि असली चोर कौन है? तब मंत्री ने कहा, पहले और दूसरे पुत्र ने उत्तम गुणों के पति और गुरु के समर्थन करते थे, लेकन तीसरा पुत्र जो धन के प्रति लालच रखने वाला है, उसने चोर को समर्थन किया था। इससे मुझे पता लग गया कि वह तीसरा पुत्र ही चोर है। सब सुनने के बाद राजा ने सेवक द्वारा उन तीनों को राजमहल बुलवाया। उन्होंने उन तीनों में पहले और दूसरे को मात्र रत्नों को दे दिया और तीसरे को कुछ नहीं दिया। राजा के कार्य से तीसरे ने समझ लिया कि उसकी चोरी का पता लग गया है। इसलिए उसने अपने अपराध के लिए सिर झुका लिया। उसके बाद उसने राजा, मंत्री और अपने दोनों भाइयों से अपनी चोरी के लिए माफी माँगी।

मार्च-2025 महीने का क्विज-32 के समाधान

1) श्री महालक्षी, 2) गाय और बछडा,

3) भगवान श्रीनिवास, 4) होली,

5) होलिका, 6) हिरण्यकश्यिपु,

7) पंचांग श्रवण, 8) सत्यहरिश्चंद्र,

9) चंद्रमती-सत्यहरिश्चंद्र,

10) कृतमाला, 11) कनकविमान,

12) श्री वेंकटेश्वर स्वामी/बालाजी,

13) अन्नमय्या, 14) माता अलर्मेलु मंगा,

15) श्री वेंकटेश्वर स्वामी/बालाजी.

चित्रकथा

चुगलखोरी की बातें सुनने का नतीजा

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

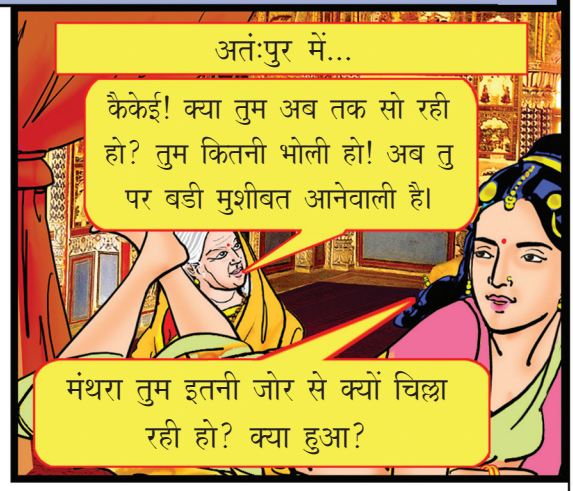

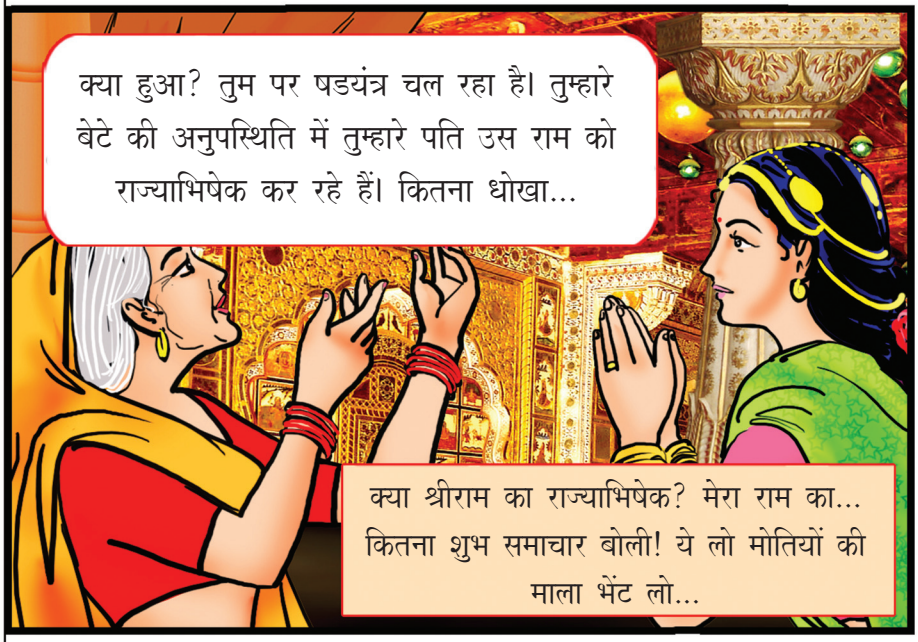

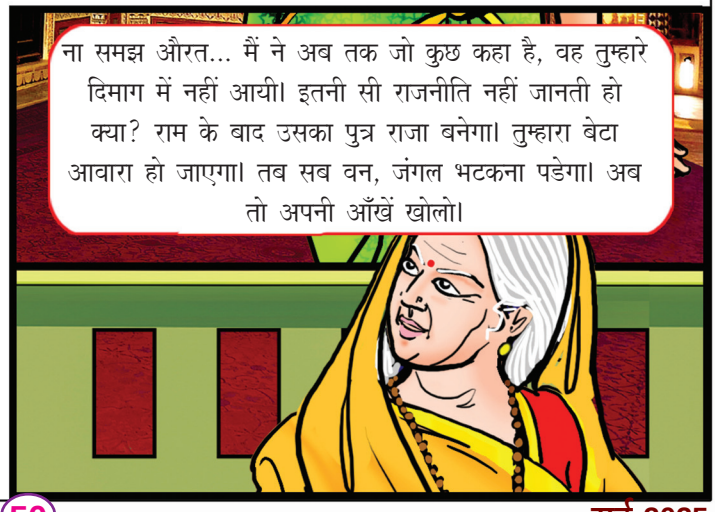

यह बात सुनते ही कैकेई का डर ज्यादा हो गयी।

मेरा भरत जंगल में भटकेगा? वह दुर्गति मेरे लडके को झेलना पडेगा?

हाँ अब समझ में आयी तुम्हारी बात? वह दुर्गति राम को मिलना चाहिए।

अब क्या रास्ता है?

रास्ता तो है क्यों नहीं है। अच्छी तरह से याद करो। पूर्व महाराजा ने तुम्हे जो वरदान दिए है। वे कभी राजा ने तुम्हें नहीं दिये। तुम कभी उसकी माँग नहीं की। अब वक्त आगया है, अब उस वर को उनसे माँगो।

गुस्से से कमरे में प्रवेश करके कार्य का साधन करो। भरत का राज्याभिषेक और राम का वनवास माँगो।

क्या महाराजा वर देंगे?

पहले उनसे वरदान देने की बात लो। पंचभूतों की साक्षी से... तब महाराजा कहाँ जाएँगे।

ठीक है मंथरा तुम जैसा कहोगी वैसे ही करूँगी। हम ने जैसा सोचा वह काम पूरा होते ही तुम्हारा कूबड को सोने का कवच पहनाऊँगी।

हाँ... हाँ... हाँ सबेरे होते ही मेरा भरत इस अयोध्या नगर का साम्राट... मैं राजमाता...

2

मंथरा की बातों में आकर कैकेई ने सब कुछ खोया। अंत में उसे अपना सुहाग को भी गवालिया। सब के सामने एक दोषी बनकर रह गयी। हरे भरे संसार में आग लगाने वाले मंथरा जैसे लोग इस दुनिया में कई लोग हैं। ऐसे लोगों से सावधान से रहना चाहिए। अन्यों की बातों को कान में न ले तो सब ठीक हो जाएगा।

लोकास्समस्ता स्सुखिनो भवंतु। स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-34

1) प्रह्लाद के पिताजी का नाम क्या है?
ज)..
2) वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी का क्या महत्व है?
ज)..
3) आंध्रप्रदेश अहोबिलम् में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)..
4) आकाश राज की धर्म पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
5) आकाश राज-धरणीदेवी का पुत्रिका का नाम क्या है?
ज)..
6) कच्छप रूप में विराजित भगवान मूर्ति का नाम क्या है?
ज)..
7) अन्नमय्या का आराध्य देवता कौन है?
ज)..
8) कालिदास द्वारा लिखित ग्रंथ का नाम क्या है?
ज)..
9) रामानुज द्वारा स्थापित नगर का नाम क्या हैं?
ज)..
10) स्वामिपुष्करिणी के निकट में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)..
11) तिरुचानूर में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
12) केसरी-अंजनी का पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
13) महेन्द्रवर्मा ने किस देश का शासन कर रहे थे?
ज)..
14) आंध्रप्रदेश में श्रीकाकुलम् प्रांत में विराजित भगवान मूर्ति का नाम क्या है?
ज)..
15) लक्ष्मण की पत्नी का नाम क्या है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

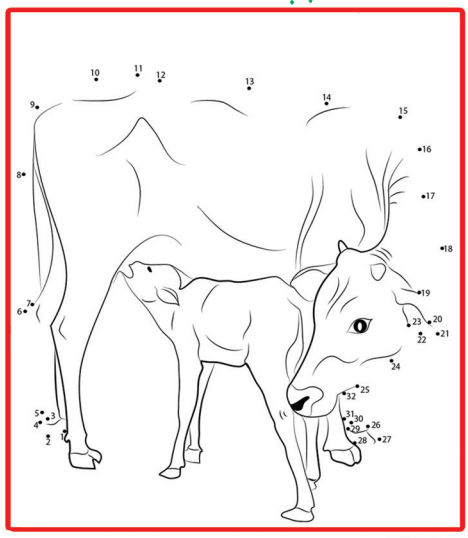

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) माघ मास	अ) श्रीकृष्ण
2) आश्वयुज मास	आ) शिवाराधन
3) श्रावण मास	इ) दुर्गा माँ
4) आकाशराज	ई) माँ लक्ष्मी
5) बलराम	उ) तोंडमान

उत्तर 1) आ 2) इ 3) ई 4) उ 5) अ

शिव भगवान का स्तोत्र

ॐकार भवन स्थानं
शंकरं दाम तेजसं
शिवं वंदे वासवाज्ञं
भूनारायणसेवितं।।

चित्रों को जोडिएँ

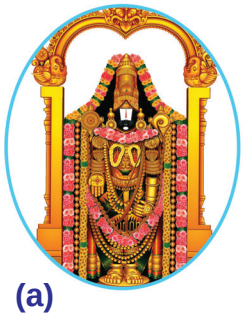
(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

उत्तर : a) 5, b) 4, c) 1, d) 3, e) 2.

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Epigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 21-03-2025 को तिरुमल बालाजी को आं.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबूनायडू जी ने उनके परिवार के साथ दर्शन किया। अनंतर मुख्यमंत्री जी को वेदपंडितों ने वेदाशीर्वचन किया। ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू और ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. श्री सी.एच.वेंकय्याचौदरी, आई.आर.एस., ने तीर्थ-प्रसाद, चित्रपठ, पंचांगं, डायरी, कैलेंडर, अगरबत्तियाँ, पंचगव्य उत्पत्ति को सौंप दिया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्यगण के साथ अन्य उच्च पदाधिकारीगण भी भाग लिया। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री जी ने ति.ति.दे. अन्नप्रसाद केंद्र में भक्तों को अन्नप्रसाद वितरण किया।

ति.ति.दे. प्रधान संपादक कार्यालय में विशेष श्रेणी उपसंपादक डॉ.के.रविचंद्रन् जी को आं.प्र. राज्य सरकार सर्वोच्च पुरस्कार 'स्वर्ण हंस', 'कलारत्न' से आजीवन उपाधि से आं.प्र. राज्य का मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबूनायडू जी ने उगादि त्योहार के दिन (तेलुगु नूतन वर्ष) दि. 30-03-2025 को तुम्मलपल्लीकलाक्षेत्र, विजयवाडा, आं.प्र. में सम्मानित किया। इन्हीं को ति.ति.दे. सप्तगिरि मास पत्रिका प्रधान संपादक डॉ.के.राधारमण जी, संपादक डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम जी और कार्यालय कर्मचारियों ने इस संदर्भ में बधाई दी।

दि. 07-03-2025 को तिरुपति, महति कलाक्षेत्र में ति.ति.दे. के द्वारा अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम को आयोजित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. ने भाग लेकर महिला शक्ति के बारे में भाषण दिया। तदनंतर ति.ति.दे. महिला कर्मचारियों को पद्मावती अवार्ड से पुरस्कार किया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-04-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

श्री नृसिंह जयंती

दि:11-05-2025

माता नृसिंहश्च पिता नृसिंहः
भ्राता नृसिंहश्च सखानृसिंहः
विद्यानृसिंहो द्रविणं नृसिंहः
स्वामी नृसिंहः सकलं नृसिंहः